श्रीश्रीलठक्कुरभक्तिविनोदकृत-

श्रीश्रीगौराङ्गस्मरणमङ्गलस्तोत्रम्

(श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभोः सुमधुरानुपूर्विकलीला)

एवम्

श्रीश्रीराधिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्



प्रकाशित एवं प्राप्तिस्थान:

श्रीगौड़ीय मठ, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-४०० ०५१. ☎२६५९१२१२

श्री श्री गुरु गौराङ्गौ जयतः



श्रीश्रीगौर-पार्षद-श्रीस्वरूप-रूपानुगवर

श्रीश्रीलठक्कुरभक्तिविनोदकृत-

श्रीश्रीगौराङ्गस्मरणमङ्गलस्तोत्रम्

(श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभोः सुमधुरानुपूर्विकलीला)

एवम्

श्रीश्रीराधिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्

प्रकाशकः

श्रीगौड़ीय मठ, बांद्रा (पूर्व), मुंबई-४०० ०५१. ☎२६५९१२१२

१००० प्रतियाँ

सम्वत् २०७२

(दि. ०९.०९.२०१६)

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

श्रीचैतन्य महाप्रभु परिचय:

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रापार्षदम् ।
यज्ञै: संकीर्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधस:

(श्रीमद्भागवतम् ११/५/३२)

श्रीराधाया: प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवास्वाद्यो
येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीय: ।
सैख्यंचास्या मदनुभवत: कीदृशं वेति लोभात्
तद्भावाद्य: समजनि शचीगर्भ सिन्धौ हरीन्दू: ।।

(श्रीचैतन्य चरितामृत)

श्रीकृष्ण परिचय:

ईश्वर: परम: कृष्ण: सच्चिदानन्द विग्रह: ।
अनादिरादिर्गोविन्द: सर्व कारणकारणम् ।।

(ब्रह्म संहिता)

नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडितम्बराय गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय ।
वन्यस्त्रजे कवलवेत्राविषाण वेणुलक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ।।

(श्रीमद्भागवतम् १०/१४/१)

श्रीमती राधिका परिचय:

अनयाऽराधितो नूनं भगवान हरिरीश्वर: ।
यन्नोविहाय गोविन्द: प्रीतो यामनयद् रह: ।।

(श्रीमद्भागवतम् १०/३०/२८)

सम्पादक:
श्रीपाद भक्ति वैभव पर्यटक महाराज
श्रीगौड़ीय मठ, बांद्रा (पूर्व), मुंबई.

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौजयत:

श्रीश्रीगौराङ्गस्मरणमङ्गलस्तोत्रम् ।

राहुग्रस्ते जडशशधरे फाल्गुने पूर्णिमायां गौडे शाके मनुशतमिते सप्तवर्षाधिके य: ।
मायापुर्यां समजनि शचि-गर्भसिन्धौ प्रदोषे तं चिच्छक्ति प्रकटित-तनुं मिश्रसूनुं स्मरामि ।।१।।

१-शक् सम्वत् १४०७ फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि की संध्या काल में जब चन्द्रमा (जड़ससधरे) राहुग्रस्त हुए तब गौड़ देश के श्रीमायापुर धाम में श्री शचिदेवी के समुद्रतुल्य गर्भ में जिनका आविर्भाव हुआ उन्हीं चित्शक्ति द्वारा प्रकटित देह, श्रीजगन्नाथ मिश्र के पुत्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

विश्वंभर प्रभु हरि द्विज गौरचन्द्र निम्बेश नामनिचय: क्रमतो वभूव ।
यस्यार्यखण्ड-मुकुटोपम गौडराष्ट्रे गौरं स्मरामि सततं कलिपावनं तम् ।।२।।

२-आर्यवर्त के मुकुट स्वरुप गौड़ राज्य में जिनके नाम विश्वम्भर महाप्रभु, गौरहरि द्विजराज गौरचन्द्र, निम्बेश (निमाई) इत्यादि (प्रभृतिं) लीला क्रम के अनुसार हुए, उन कलिपावन श्रीगौरचन्द्र का मैं सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

अङ्गिकुर्वन् निजसुखकरीं राधिकाभावकान्तिं मिश्रावासे सुललितवपु गौरवर्णो हरि र्य: ।
पल्लीस्त्रीणां सुखमभिदधत् खेलयामास बाल्ये वन्देऽहं तं कनकवपुषं प्राङ्गणे रिङ्गमाणम् ।।३।।

३-निज सुखकारी श्रीराधिका का भाव एवं कान्ति ग्रहण हेतु अति ललित देह विशिष्ट गौर वर्ण वाले जिन श्रीहरि ने बाल्यकाल में श्रीजगन्नाथ मिश्र के भवन में पड़ोसी स्त्रीगण को अत्यधिक सुख प्रदान करने वाली क्रीड़ा (लीला) की, श्री शचिदेवी के आँगन में घुटने पर चलने वाले उन स्वर्ण कान्ति धारी शिशु की मैं वन्दना करता हूँ ।

सर्पाकृतिं स्वाङ्गनगं ह्यनन्तम् कृत्वासनं यस्तरसोपविष्ट: ।
तत्याज तञ्चात्मजनानुरोधात् विश्वंभरं तं प्रणमामि नित्यम् ।।४।।

४-जो अपने घर के आँगन में आए हुए सर्पाकार धारी श्रीअनन्त देव पर बलपूर्वक विराजमान हुए थे और सज्जनों के अनुरोध पर श्रीअनन्त देव को छोड़ दिया था उन्हीं श्रीविश्वम्भर को मैं नित्यकाल प्रणाम करता हूँ ।

बाल्ये श्रृण्वन् वदहरिमिति क्रन्दनादयन्निवृत्त स्तस्मात् स्त्रीणां सकलसमये नामगानं तदासीत् ।
मात्रे ज्ञानं विशदमवदन्मृत्तिकाभक्षणे य: वन्दे गौरं कलिमलहरं नाम-गानाश्रयं तम् ।।५।।

५-बाल्या वस्था में हरिबोल सुनकर जो क्रन्दन (रुदन) से निवृत्त हो जाते थे एवं इस हेतु उस ही समय सभी कार्यकलापों में स्त्रीगण हरिनाम का गान करती थीं, जिन्होंने मिट्टी-

सेवन (भक्षण) लीला द्वारा अपनी माँ को सुनिर्मल तत्व ज्ञान का उपदेश प्रदान किया था, उन्हीं कलिदोषहारी श्रीहरि नाम कीर्तन प्रवर्तक श्रीगौर हरि की मैं वन्दना करता हूँ ।

पौगण्डादौ द्विजगणगृहे चापलं यो वितन्वन् विद्यारंभे शिशुपरिवृतो जाह्नवीस्नानकाले ।
वारिक्षेपैर्द्विजकुलपतीन् चालयामास सर्वान् तं गौराङ्गं परमचपलं कौतुकीशं स्मरामि ।।६।।

६-विद्यारंभ काल तथा पौगंड वय काल के प्रारंभ में जिन्होंने ब्राह्मणों के घर में अनेक प्रकार की चपलता दिखाई एवं अन्य बालकों के साथ गंगा स्नान के समय जल प्रक्षालन द्वारा ब्राह्मण कुल प्रमुखगण को विचलित किया, उन्हीं अति चपल व परम हर्ष (आमोद) प्रदायक श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

तीर्थ भ्रामिद्विजकुलमणे र्भक्षयन् पक्वमन्नं पश्चात्तं यो विपुलकृपया ज्ञापयामास तत्त्वम् ।
स्कन्धारोहीच्छलबहुतया मोहयामास चौरौ वन्देऽहं तं सुजनसुखदं दण्डदं दुर्जनानाम् ।।७।।

७-जिन्होंने तीर्थयात्रा पर निकले किसी ब्राह्मण श्रेष्ठ द्वारा बनाया अन्न भक्षण करने के उपरान्त विपुल कृपा पूर्वक उन ब्राह्मण को निजतत्व का ज्ञान प्रदान किया था एवं जिन्होंने दो चोरों के कंधों पर आरोहण करके छलावे से उन्हें भ्रमित व मोहित किया, सज्जनगण के आनंददाता व दुष्टगण के दण्डविधाता (श्रीगौरहरि) की मैं वन्दना करता हूँ।

आरुह्य पृष्ठं शिवभक्तभिक्षोः संकीर्त्य रुद्रस्य गुणानुवादम् ।
रेमे महानन्दमयो य ईश स्तं भक्तभक्तं प्रणमामि गौरम् ।।८।।

८-जिन प्रभु ने एक शिव भक्त भिक्षु के पीठ पर चढ़कर परम आनंदित हो कर रुद्र की गुणानुवाद संकीर्तन क्रीड़ा करवाई थी उन्हीं भक्ताधीन श्रीगौरचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ ।

लक्ष्मीदेव्याः प्रणयविहितं मिष्टमन्नं गृहित्वा
तस्यै प्रादात् वरमतिशुभं चित्तसन्तोषणं यः ।
मस्याश्चिह्नैर्निजपरिजनान् तोषयामास यश्च
तं गौराङ्गं परमरसिकं चित्तचौरं स्मरामि ।।९।।

९-जिन्होंने श्रीलक्ष्मीप्रिय देवी द्वारा प्रीति पूर्वक प्रदत्त मिष्ठान्न ग्रहण करके चित्त संतोषकारी अति शुभ वरदान प्रदान किया था एवं जिन्होंने काली मसी (दवात) से स्वशरीर पर अंकित चिन्हों द्वारा अपने आत्मीय जनों को आनंदित किया था, उन्हीं परम रसिक चित्तचोर श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

उच्छिष्टभाण्डेषु बसन् वराङ्गः मात्रेददौ ज्ञानमनुत्तमं यः ।
अद्वैतवीथीपथिकै रुपास्यं तं गोरचन्द्रं प्रणमामि नित्यम् ।।१०।।

१०-एक दिन जिन सुंदर पुरुष ने झूठे और टूटे बर्तन-भांडों के ढ़ेर के बीच में बैठ कर अपनी माँ को अद्वैतवाद के अनुगामियों का उपास्य (उच्छिष्ट-अनुच्छिष्ट समता सूचक) उत्तम ज्ञान प्रदान किया था मैं नित्यकाल उन्हीं श्रीगौरचन्द्र को प्रणाम करता हूँ ।

दृष्ट्वा तु मातुः कदनं स्वलोष्टैः तस्यै ददौ द्वे सितनारिकेले ।
वात्सल्यभक्त्या सहसा शिशु र्यः तं मातृभक्तं प्रणमामि नित्यम् ।।११।।

११-जिन शिशुने अपने द्वारा फेंके गये पत्थर से आहत माँ की पीड़ा दर्शन करने पर वात्सल्य भक्ति पूर्वक उनको सहसा दो शुभ्र नारियल फल ला कर दिए थे उन मातृभक्त श्रीगौरचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ ।

संन्यासार्थं गतवति गृहादग्रजे विश्वरुपे मिष्टालापै र्व्यथितजनकं तोषयामास तूर्णम् ।
मातुः शोकं पितरि विगते सान्त्वयामास यश्च तं गौराङ्गं परमसुखदं मातृभक्तं स्मरामि।।१२।।

१२-ज्येष्ठ भ्राता श्रीविश्वरुप के सन्यास ग्रहण हेतु गृह परित्याग के पश्चात् पिता को मधुर वाक्यों द्वारा जिन्होंने शीघ्र परितुष्ट किया था और पिता के विगत होने के पश्चात् जिन्होंने शोक संतप्त जननी को सांत्वना दी थी उन्हीं परम सुखदाता मातृभक्त श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

प्रेतक्षेत्रे द्विजपरिवृतः सर्वदेवप्रणम्यः मन्त्रं लेभे निजगुरुपुरी वक्त्रतो यो दशार्णम् ।
गौडं लब्ध्वा स्वमतिविकृतिच्छद्मनोवाच तत्त्वं तं गौराङ्गं नवरसपरं भक्तमूर्तिं स्मरामि।।१३।।

१३-जिन्होंने ग्रह यज्ञ (मख) के उद्देश्य से श्रीवल्लभाचार्य की पुत्री श्रीलक्ष्मीप्रिया देवी को इच्छा पूर्वक अंगीकार करके पूर्व देश (बांग्लादेश) गमन किया था और शास्त्रवृत्ति एवं विद्याचर्चा द्वारा प्रचुर धन अर्जन किया था उन्हीं गृहस्थ श्रेष्ठ धर्ममूर्ति स्वरुप श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

विप्रपादोदकं पीत्वा यो बभूव गतामयः ।
वर्णाश्रमाचारपालं तं स्मरामि महाप्रभुम् ।।१४।।

१४-प्रभु से साध्य साधन तत्व विषय शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात, सुजन (श्री) तपन मिश्रा जब नवद्वीप आना चाहते थे तब उनको वाराणसी भेज कर, स्वंय स्वदेश (नवद्वीप) आने के बाद, श्रीलक्ष्मीप्रिया देवी के विरह से शोक संतप्त जननी की तत्व युक्त और शांतिप्रद वचन द्वारा सांत्वना दी थी उन्ही शांति सुख दाता सौम्य मूर्ति श्रीगौराङ्ग देव का मैं स्मरण करता हूँ ।

लक्ष्मीदेवीं प्रणयविधिना वल्लभाचार्यकन्या मङ्गीकुर्वन् गृहमखपरः पूर्वदेशं जगाम ।
विद्यालापैर्बहुधनमहो प्राप यः शास्त्रवृत्ति स्तं गौराङ्गं गृहपतिवरं धर्ममूर्तिं स्मरामि।।१५।।

१५-जिन्होंने अपनी जननी का आदेश मानकर श्रीविष्णुप्रिया देवी को विवाह विधी सहित ग्रहण किये और गंगा तट पर अपने परिकरके साथ दिग्विजय पण्डित (केशव काश्मीरी) का दर्प नाश कर पंडित समाज के मणि स्वरुप नवद्वीप चन्द्ररुप लीला किये, समस्त विषय के अध्यापक गण के मध्य सिंह स्वरुप उन्हीं श्रीगौराङ्ग की मैं वंदना करता हूँ।

वाराणस्यां सुजनतपनं सङ्गमय्य स्वदेशं लब्ध्वा लक्ष्मीविरहवशतः शोकतप्तां प्रसूतिम् ।
तत्त्वालापैः सुखदवचनैः सान्त्वयामास यो वै तं गौराङ्गं विरतिसुखदं शान्तमूर्तिं स्मरामि।।१६।।

१६-जिन्होने नवद्वीप में विद्या विलास द्वारा समस्त द्विजगण, स्मार्त पंडित गण और न्याय पंडित व तांत्रिक गण को जीत कर विराजमान थे उन्हीं ज्ञान रुपी श्रीगौरचन्द्र को में प्रणाम करता हूँ ।

मातुर्वाक्यात् परिणयविधौ प्राप्यविष्णुप्रियां यः गङ्गातीरे परिकरजनैर्दिग्जितो दर्पहारी।
रेमे विद्वज्जनकुलमणिः श्रीनवद्वीपचन्द्रः वन्देऽहं तं सकलविषये सिंहमध्यापकानाम्।।१७।।

१७-जो (महाप्रभु) ब्राह्मण का चरणोदक पानकर रोग मुक्त हुऐ, वर्णाश्रम धर्म के आचार संरक्षक, उन्हीं श्रीमद्‌महाप्रभु का मैं स्मरण करता हूँ ।

विद्याविलासैर्नवखण्डमध्य सर्वान् द्विजान् यो विरराज जित्वा ।
स्मार्तांश्च नैयायिक-तान्त्रिकांश्च तं ज्ञानरुपं प्रणमामि गौरम् ।।१८।।

१८-प्रेततीर्थ गयाधाम में (ब्राह्मणगण द्वारा परिवृत) द्विजगण परिवेष्टित, जिन्होंने सकल देवगण द्वारा पूजित, निज गुरुदेव श्रीईश्वरपुरी पादके श्रीमुख से दश अक्षर मंत्र प्राप्त किया था एवं वहाँ (गया) से गौड़ देश लौटकर (आत्मतत्व प्रकाशित करने हेतु) निजमति विकार ग्रस्त होने का छलावा किया था, उन अद्‌भुत प्रेमी भक्त रुपी श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

भक्त्यालापैर्निरवधि तदाद्वैतमुख्या महान्तः
प्राप्ता यस्याश्रयमतिशयं कीर्तनाद्यैर्मुरारेः ।
नित्यानन्दोदयसमयतो यो बभूवेशचेष्टः
वन्दे गौरं नयनसुखदं दक्षिणं षड्भुजं तम् ।।१९।।

१९-तब से (श्लोक १८ में वर्णित लीला काल में) महाप्रभु निरंतर श्रीहरि कीर्तनादि भक्ति विषयक चर्चा (में रत रहते थे) यह श्रवण कर भी अद्वैतादि प्रमुख महाजन गण परमाश्रम प्राप्त हुए थे । जो (महाप्रभु) श्रीनित्यानन्द प्रभु के प्रकाश के माध्यम से निज भगवत भाव प्रकट करने हेतु तत्पर हुए थे उन्हीं नयनानन्द दाता दयालु छः भुजाधारी श्रीगौरचन्द्र की मैं वंदना करता हूँ ।

यः कोलरुपधृगहो रमणीयमूर्ति र्गुप्ते कृपाञ्च महतीं सहसा चकार ।
तं व्यासपूजनविधौ बलदेवभावात् माध्वीकयाचनपरं परमं स्मरामि ।।२०।।

२०-अहो! श्रीवराहरुपधारी आराध्यस्वरुप जिन्होंने अकस्मात् श्रीमुरारी गुप्ता पर अतिशय कृपा की, श्रीव्यास पूजा विषय में श्रीबलराम के भावावेष हेतु मद्य माँगने वाले उन्हीं परमतत्व का मैं स्मरण करता हूँ ।

अद्वैतचन्द्रविभुना सगणेन भक्त्या नित्यञ्च कृष्णमनुना परिपूजितो यः ।
श्रीवासमन्दिरनिधिं परिपूर्णतत्त्वं तं श्रीधरादिमहतां शरणं स्मरामि ।।२१।।

२१-भक्तगण सहित प्रभु अद्वैतचन्द्र जिनकी सर्वदा भक्ति सहित कृष्णमंत्र से पूजा करते हैं, श्रीवास मंदिर के निधि, श्रीधर आदि महाजन के आश्रयरुप परिपूर्णतत्व, उन्हीं श्रीगौरसुंदर का मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीवासपाल्यं यवनं विशोध्य चक्रे सुभक्तं स्वगुणं प्रदर्श्य ।
प्रेम्ना समुत्तं विषयाद्विरक्तं यस्तं प्रभुं गौरविधुं स्मरामि ।।२२।।

२२-प्रेम से महामत्त, विषय से विरक्त जिन्होंने निज महिमा प्रदर्शन हेतु श्रीवास पतित (दर्जी) यवन को (शोधन) शुद्धिकरण कर उन्हें उत्तम भक्त बनाया, उन्हीं ईश्वर श्रीगौरचन्द्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीरामरुपधृगहो भिषजो मुरारेः श्रुत्वा स्तवं रघुपतेर्मुदमाप यो वै ।
चक्रे कुसङ्गरहितं कृपया मुकुन्दं तं शुद्धभक्तिरसदातिवरं स्मरामि ।।२३।।

२३-अहो! श्रीराम स्वरुप धारण कर वैद्य श्रीमुरारी गुप्ता का रघुनाथ स्तव श्रवण कर जो परम आनंदित हुए, कृपावशतः मुकुन्द को कुसंग से छुड़ाया, उन्हीं श्रेष्ठ शुद्ध भक्ति दाता श्रीगौराङ्ग देव का मैं स्मरण करता हूँ ।

आज्ञापयच्च भगवानवधूतदासौ नामानि गोकुलपते र्नगरेषु दातुम् ।
सर्वत्रजीवनिचयेषु परावरेषु यस्तं स्मरामि पुरुषं करुणावतारम् ।।२४।।

२४-जिन भगवान ने नगर-नगर सर्वत्र उत्तम और अधम सकल जीव को गोकुलपति श्रीकृष्ण के नाम समूह का वितरण हेतु अवधूतचन्द्र श्री श्रीनित्यानन्द प्रभु और ठाकुर श्रीहरिदास को आज्ञा दी थी, उन्हीं करुणावतार ईश्वर श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

योऽद्वैतसद्मविचलन् सह चाग्रजेन संन्यासधर्मरहितं ध्वजिनं सुरापम् ।
तत्त्वं विशुद्धमवदत् ललिताख्यपुर्यां तं शुद्धभक्तिनिलयं शिवदं स्मरामि ।।२५।।

२५-और, जिन्होंने ज्येष्ठ श्रीनित्यानन्द के साथ शांतिपुर में स्थित श्रीअद्वैत गृह गमन काल में ललितपुर नामक गाँव में सुरा पीने वाले सन्यास धर्म रहित एक कपटी सन्यासी को विशुध्द तत्त्व उपदेश किये थे, उन्हीं शुद्ध भक्ति का आश्रय एवं मंगलदाता श्रीगौरचन्द्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

अद्वैतवादशठताश्रितदेशिकस्य पृष्ठं व्यताडयदहो सहसा हरि र्यः।
प्रेम्नापि भक्तिपथगञ्च चकार तं तं मायाहरं सुविमलं सततं स्मरामि।।२६।।

२६-जिन्होंने अद्वैत आचार्य जब कपटरुपी अद्वैतावाद के प्रचारक बने तब उनकी पीठपर कृपा कर के कराघात किया था और उनका प्रेम के बल से उन्हें भक्ति पथपर पुनः लाया था, सुविमल एवं मायावाद के भ्रम के हरता उन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का नित्य मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीरुपधृग्भजनसागरमग्ननृभ्यो यश्चन्द्रशेखरगृहे प्रददौ स्वदुग्धम्।
स्वां दर्शयन् विजयमुद्धरति स्म भूतिं तं सर्व शक्तिविभवाश्रयणं स्मरामि।।२७।।

२७-जिन्होंने चद्रशेखर के गृह मे लक्ष्मीदेवी का रुप धारण किया था और वहाँ उपस्थित भजन के सागर मे डूबे हुये भक्तों को अपना दूध पिलाया था और अपना वैभव दिखाकर विजयदास का उद्धार किया था, समस्त अप्राकृत शक्तियों एवं वैभव का आश्रय उन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

निद्रात्यागः स्नपनमशनं गोद्रुमादौ विहारो
ग्रामे ग्रामे विचरणमहो कीर्तनञ्चाल्पनिद्रा ।
यामे यामे क्रमनियमतो यस्यभक्तै र्वभूवु
स्तं गौराङ्गं भजनसुखदं ह्यष्टयामं स्मरामि ।।२८।।

२८-जिन्होंने गोद्रुम एवं अनेक अन्य गाँवो में अपने भक्तों के सहित विचरण किया था, जहाँ प्रहर प्रहर क्रम से अनेक लीलायें सम्पन्न की थी, निद्रा त्याग, स्नान, भोजन, नित्य कीर्तन और कदाचित निद्रा, भक्ति के आनन्द के प्रदाताउन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का अष्ट प्रहर मैं स्मरण करता हूँ ।

यो वै संकीर्तनपरिकरैः श्रीनिवासादिसङ्घै स्तत्रत्यानां पतितजगदानन्दमुख्यद्विजानाम्।
दुर्वृत्तानां हृदयविवरं प्रेमपूर्णं चकार तं गौराङ्गं पतितशरणं प्रेमसिन्धुं स्मरामि।।२९।।

२९-श्रीनिवासादि संकीर्तन अनुयायियों के सहित जिन्होंने वहाँ (श्रीनवद्वीप) के जगदानन्द विप्र एवं अनेक अन्य.पतित एवं दुष्ट ब्राह्मणों के हृदयकन्दरों का भगवत् प्रेम से पूर्ण किया था, पतितों के शरण एवं प्रेम के सिन्धु उन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

भावावेशैर्निखिलसुजनान् शिक्षयामास भक्तिं
तेषां दोषान् सदयहृदयो मार्जयामास साक्षात् ।
भक्तिंव्याख्यां सुजनसमितौ यो मुकुन्दश्चकार
तं गौराङ्गं स्वजनकलुषक्षान्तिमूर्तिं स्मरामि ।।३०।।

३०-स्वयं भावावेशित होकर जिन्होंने समस्त भक्तों को भक्ति की शिक्षा दी थी, हृदय से दयालु होकर जिन्होंने समस्त भक्तों के दोषों का परिमार्जन किया था, मुक्ति के प्रदाता जिन्होंने साधुसभा मे भक्ति का व्याखान किया था, अपने भक्तों के दोषों को क्षमा करने की साक्षात मुर्ति उन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

यो वै संकीर्तनसुखरिपु चान्दकाजीं विशोध्य लास्योल्लासैर्नगरनिचये कृष्णगीतं चकार।
वारंवारं कलिगदहरं श्रीनवद्वीपधाम्नि तं गौराङ्गं नटनविवंश दीर्घबाहुं स्मरामि।।३१।।

३१-जिन्होंने सकीर्तन के आनन्द का विरोध करने वाले शत्रु चाँदकाजी का उद्धार कर, श्रीनवद्वीप धाम के नगरों में उल्लासित नृत्य के साथ कलि के रोग को हरने वाला कृष्ण के दिव्य नामों का कीर्तन बारम्बार किया था, नृत्य में निमग्न दीर्घ बाहुऔ वाले उन्ही भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

गङ्गादासो मुररिपुभिषक् श्रीधरः शुक्लवस्त्रः सर्वे यस्य प्रणतिनिरताः प्रेमपूर्णा बभूवुः।
यस्योच्छिष्टाशनसुरतिका श्रीलनारायणी च तं गौराङ्गं परमपुरुषं दिव्यमूर्तिं स्मरामि।।३२।।

३२-गंगादास, वैद्यमुरारी गुप्त, श्रीधर और शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी ये सभी जिनके आदर में प्रवृत होकर प्रेमपूर्ण हुए थे और श्रीमती नारायणी जिनका उच्चिष्ट सेवन कर हर्षित हुइ थी दिव्यमुर्ति एवं पुरुषों में परम उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीवासस्य प्रणयविवशस्तस्य सूनोर्गतासोर्वक्त्रात्तत्त्वं परमशुभदं श्रावयामास तस्मै।
तद्दासेभ्योऽपिच शुभमतिं दत्तवान् यः परात्मा वन्दे गौरं कुहकरहितं जीवनिस्तारकं तम्।।३३।।

३३-जिन परमेश्वर ने श्रीवास ठाकुर के प्रेम से विवश होकर उनके मृत पुत्र के मुँह से परम शुभद तत्त्व उन्ही को सुनवाया था और उनके दासों को भी शुभ मनोभाव प्रदान किया था, छल कपट से दूर एवं जीवों के उद्धारक उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

गोपीभावात् परमविवशो दण्डहस्तः परेशोवादासक्तानतिजडमतीन् ताडयामास मूढान्।
तस्मात्ते यत् प्रतिभटतया वैरभावानतन्वन् तं गौराङ्गं विमुखकदने दिव्यसिंहं स्मरामि।।३४।।

३४-दिव्य प्रेम में गोपियों की तरह भावविभोर होने परवादविवाद में आसक्त एवं बुद्धिरहित मूढ़व्यक्तियोंके उनकी निन्दा करने पर उन व्यक्तियों के हाथों में डण्डे द्वारा

जिन्होंने दण्डित किया था, कारण स्वरुप प्रतिद्वन्दी भाव से उन व्यक्तियों ने जिनकी शत्रुता अपनायी थी, स्वयंसे प्रतिकूल होने वालों का दमन करने के लिए दिव्यसिंह रुप धारी उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

तेषां पापप्रशमनमतिः कण्टके माघमासे लोकेशाक्षिप्रमवयसि यः केशवान्यासलिङ्गम्।
लेभे लोके परमविदुषां पूजनीयोवरेण्यस्तं चैतन्यं कचविरहितं दण्डहस्तं स्मरामि।।३५।।

३५-उन्हीं मूढ व्यक्तियों के पापों का निवारण करने के लिए जगत में परम पण्डित गण के पूजनीय जिन श्रेष्ठ पुरुष ने चौबीस वर्ष की उम्र में कटवा नगर में माघ महिने में श्रीकेशव भारती से सन्यास ग्रहण किया था, केशरहित एवं दंडाधारी उन्हीं श्रीकृष्ण चैतन्य का मैं स्मरण करता हूँ ।

त्यक्त्वा गेहं स्वजनसहितं श्रीनवद्वीपभूमौ नित्यानन्दप्रणयवशगः कृष्णचैतन्यचन्द्रः।
भ्रामं भ्रामं नगरमगमच्छान्तिपूर्वं पुरं यस्तं गौराङ्गं व्रजजिगमिषाविष्टमूर्तिं स्मरामि।।३६।।

३६-नवद्वीप में स्थित अपने गृह एवं स्वजनों को त्यागने के पश्चात जिन कृष्ण चैतन्यचन्द्र ने श्रीनित्यानन्द के प्रेम में वशीभूत होने के कारण उन पर विश्वास कर घूमते घूमते शांतिपुर नगर में पहुँच गए थे, व्रजधाम में जाने की अभिलाषा से पूरित उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

तत्रानीतात्वजितजननी हर्षशोकाकुला सा भिक्षां दत्वा कतिपयदिवा पालयामास सूनुम्।
भक्त्या यस्तद्विधिमनुसरन् क्षेत्रयात्रां चकार तं गौराङ्गं भ्रमणकुशलं न्यासिराजं स्मरामि।।३७।।

३७-हर्ष और शोक से आकुल श्रीगौर सुंदर की जननी श्रीशचीदेवी को वहाँ (शांतिपुर नगर) लाने के पश्चात् उन्होंने (जननी ने) कई दिनों तक भिक्षा दान कर के पुत्र का पालन-पोषण किया था, जननी द्वारा दिए गए आदेश का भक्ति पूर्वक अनुसरण करते हुए जिन्होंने श्रीक्षेत्र पूरी की यात्रा की थी, भ्रमण में निपुण एवं संन्यासियों में सम्राट उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

नित्यानन्दो विबुधजगदानन्द दामोदरौ च लीलागाने परमनिपुणो दत्तसूतो मुकुन्दः।
एते भक्ताश्चरणमधुपा येन सार्द्धं प्रचेलुस्तं गौराङ्गं प्रणतपटल प्रेष्ठमूर्तिं स्मरामि।।३८।।

३८-श्रीनित्यानन्द प्रभु, पण्डित श्रीजगदानन्द और श्रीदामोदर, और भगवान् की लीलाओं का कीर्तन करने में परम निपुण दत्तवंशज मुकुन्द, इन सब अनुरागी, भँवरों की भाँति भगवान् के चरण कमलों के मधु का पान करने वाले भक्तों के साथ जिन्होंने (श्रीक्षेत्र की) यात्रा की थी, प्रणत भक्तों की परमप्रिय मुर्ति उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

त्यक्त्वा गङ्गातटजनपदां श्राम्बुलिङ्गं महेशं ओढ्रे देशे रमणविपिने क्षीरचौरं ददर्श।
गोपालं वै कटकनगरे यो ददर्शात्मरुपं तं गौराङ्गं स्वभजनपरं भक्तमूर्तिं स्मरामि।।३९।।

३९-जिन्होंने गंगा के तीर पर स्थित ग्राम समूह एवं (छत्र भाग में) श्रीअम्बुलिगं शिव को पीछे छोड कर, उत्कल देश के रमणीय बागानों (रेमुना) में श्रीखीरचोरगोपीनाथ और कटक नगर (कटवा) में स्वयं स्वरुप साक्षीगोपाल का दर्शन किया था, उन्हीं भक्तरुप धारी और स्वयं को भजन में परायण भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

एकाम्राख्ये पशुपतिवने रुद्रलिङ्गं प्रणम्य यातः कापोतकशिवपुरं स्वस्यदण्डं विहाय।
नित्यानन्दस्तु तदवसरे यस्यदण्डं बभञ्ज तं गौराङ्गं कपटमनुजं भक्तभक्तं स्मरामि।।४०।।

४०-श्रीमहाप्रभु भगवान् शिव को समर्पित एकाम्र नामक वन में शिवलिंग को प्रणाम कर जब कापोतक नामक शुभ नगर (कमलपुर) में पहुँचे और अपना डण्डा रखा तब उसी अवसर पर श्रीनित्यानन्द ने उनके डण्डे का भंग किया था, मनुष्यवेश धारी एवं निजभक्तों के भक्त उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

भग्ने दण्डे कपटकुपितस्तान् विहाय स्ववर्गानेकोनीलाचलपतिपुरं प्राप्य तूर्णं प्रभुर्यः।
भावावेशं परममगमत् कृष्णरुपं विलोक्य तं गौराङ्गं पुरटवपुषं न्यस्तदण्डं स्मरामि।।४१।।

४१-श्रीमहाप्रभु ने डण्डा के भग्न होने पर क्रुद्ध होने का ढोंग किया और अपने पार्षदों को छोड़ कर शीघ्रता से जगन्नाथपुरी अकेले पँहुचे । वहाँ पर भगवान् कृष्ण के रुप (श्रीजगन्नाथ) के दर्शन पर वे अत्याधिक भावाविष्ट हुए थे, स्वर्णमय देहधारी एवं डण्ड त्यागी उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

भावास्वादप्रकटसमये सार्वभौमस्य सेवा तस्यानर्थान् प्रकृतिविपुलान् नाशयामास सर्वान्।
तस्माद् यस्य प्रबलकृपया वैष्णवोऽभूत् स चापि तं वेदार्थ प्रचरणविधौ तत्त्वमूर्तिं स्मरामि।।४२।।

४२-जब भगवान् श्रीगौराङ्ग भगवत् प्रेम का आस्वादन कर रह थे और भावों की अभिव्यक्ति हो रही थी, तब श्रीसार्वभौम ने उनकी सेवा की थी और उस सेवा से उनके (श्रीसार्वभौम के) स्वभाव में स्थित सारे भौतिक अनर्थों का नाश हुआ था और महाप्रभु की परम कृपा पाकर वे (श्रीसार्वभौम) वैष्णव बन गए, वेदों के अर्थों के प्रचारक एवं तत्त्वों की मुर्ति स्वरुप उन्हीं भगवान् श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

तत्रोषित्वा कतिपयदिवा दाक्षिणात्यं जगाम कूर्मक्षेत्रे गदविरहितं वासुदेवं चकार।
रामानन्दे विजयनगरे प्रेमसिन्धुं ददौ य स्तं गौराङ्गं जनसुखकरं तीर्थमूर्तिं स्मरामि।।४३।।

४३-जिन्होंने नीलाचल धाम में कुछ दिन निवास करने के पश्चात् दक्षिण भारत यात्रा की थी, श्रीकुर्मक्षेत्र में विप्र वासुदेव को कुष्ठ रोग से मुक्त किया था, विजयनगर में श्रीरामानन्द को प्रेमसिंधु समर्पण किए थे, वही जनसुखदाता तीर्थ-विग्रह स्वरुप श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

देशे देशे सुजननिचये प्रेमविस्तारयन् यो
रङ्गक्षेत्रे कतपियदिवा भट्टपल्ल्यामवात्सीत् ।
भट्टाचार्यान् परमकृपया कृष्णभक्तांश्चकार
तं गोपालालयसुखनिधिं गौरमूर्तिं स्मरामि।।४४।।

४४-जिन्होंने देश-देश भ्रमण कर सज्जन मध्य प्रेम विस्तार करने की दौरान श्रीरङ्गम में श्रीवेङ्कट भट्ट के गृह में कुछ दिन निवास किया था एवं परम कृपापूर्वक भट्टाचार्य गण को कृष्ण भक्त बनाया था, श्रीगोपाल भट्ट गृह के सुख विधाता उन्हीं श्रीगौराङ्ग मूर्ति का मैं स्मरण करता हूँ ।

बौद्धान् जैनान् भजनरहितान् तत्त्ववादाहतांश्च
मायावादहृदनिपतितां शुद्धभक्तिप्रचारैः ।
सर्वांश्चैतान् भजनकुशलान् यश्चकारात्मशक्त्या
वन्देऽहं तं बहुमतधियां पावनं गौरचन्द्रम् ।।४५।।

४५-जिन्होंने शुद्ध भक्ति प्रचार द्वारा और निज प्रभाव से तत्व वाद विच्युत तत्व वादीगण (या तत्व विचार विषय में सम्पूर्ण पराजित) तथा बौद्ध, जैन, भजनहीन, अवैयक्तिक मायावाद दर्शन की झील में पतितगण-इन सभी को निपुण भक्त बनाए थे, विभिन्न मानसिक अटकलों में प्रविष्टगण के परित्राता उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मै स्मरण करता हूँ ।

दत्वानन्दं कलिमलहरं दाक्षिणात्येभ्य ईशो नीत्वा ग्रन्थौ भजनविषयौ कृष्णदासेन सार्द्धम्।
आलालेशालयपथगतं नीलशैलं ययौ य स्तं गौराङ्गं प्रमुदितमतिं भक्तपालं स्मरामि।।४६।।

४६-जो प्रभु दक्षिण देश वासीगण को कलिदोष नाशकारी प्रेमानन्द वितरण कर भजन से संबंधित दो ग्रंथ (ब्रह्म संहिता और कृष्ण कर्णामृत) साथ में लेकर कालाकृष्णदास सहित श्रीआलालनाथ मंदिर का पथ के माध्यम से नीलाचल में गमन किया था उन्हीं अति हर्षित भक्त रक्षक श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

काशीमिश्रद्विजवरगृहे शुद्धचामीकराभो वासञ्चक्रे स्वजननिकरै र्यः स्वरुपप्रधानैः।
नामानन्दं सकल समये सर्वजीवाय योऽदात् तं गौराङ्गं स्वजनसहितं फुल्लमूर्तिं स्मरामि।।४७।।

४७-विशुद्ध स्वर्णकांति विशिष्ठ जिन ब्राह्मण श्रेष्ठ श्रीकाशी मिश्र के गृह में स्वरुप दामोदर प्रमुख निज गण के साथ निवास किए थे; जिन्होंने सर्वदा सर्व जीव को नामानन्द प्रदान किया था, स्वजन सहित प्रफुल्ल मूर्ति उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

नीलागेशो रथमधिगते वैष्णवे र्य स्तदग्रे
नृत्यन् गायन् हरिगुण-गणं प्लावयामास सर्वान् ।
प्रेम्नौढ्रीयान् गजपति मुखान् सेवकान् शुद्धभक्तां
स्तं गौराङ्गं स्व सुखजलधिं भावमूर्तिं स्मरामि ।।४८।।

४८-जब श्रीनीलाद्रिनाथ रथ पर अधिष्ठित हुए तब वैष्णव गण के साथ नृत्य और हरिगुण गान कर शुद्ध भक्त और सेवक राजा गजपति-प्रमुख उत्कल वासीगण, को प्रेम से प्लावित किए थे, स्वसुख-समुद्र मूर्तिमान भावस्वरुप उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

ओढ्रदेशाद् ययौ गौडं सीमायामुत्कलस्ययो ।
हित्वौढ्रपार्श्वदां देवस्तं स्मरामि शचिसुतम् ।।४९।।

४९-जिन प्रभुने उत्कल देशी भक्तगण को उत्कल देश की सीमा मध्य रख कर गौड़ देश में गमन किया था, उन्हीं श्रीशचिनन्दन का मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीवासं वासुदेवञ्च राघवं स्व स्व मन्दिरे ।
दृष्ट्वा शान्तिपुरं यातो यस्तं गौरं स्मराम्यहम् ।।५०।।

५०-जिन्होंने श्रीवास, वासुदेव और राघव पण्डित को निज निज गृह पर दर्शन करने के बाद शांतिपुर में गए थे, उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

श्रीविद्यानगरं गच्छन् विद्यावाचस्पते र्गृहम् ।
कुलियायां नवद्वीपे ययौ यस्तमहं भजे ।।५१।।

५१-जिन्होंने श्रीविद्यानगर में विद्यावाचस्पती के गृह में जा कर नवद्वीप अंतर्गत श्रीकोलद्वीव (या कूलिया) में गए थे, उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

विद्यारुपोद्भवधनजनैर्यानलभ्या नरेण तां चैतन्यप्रभुवरकृपां दैन्यभावादवाप।
देवानन्दः कुलियनगरे यस्य भक्तान् प्रपूज्य वन्दे गौरं विमदविदुषां शुद्धभक्त्यैकलभ्यम् ।।५२।।

५२-विद्या, रुप, जन्म, धन और ज्ञान - इसके द्वारा मनुष्य जो प्राप्त नहीं कर सकते हैं, श्रीचैतन्य महाप्रभु की कृपा से कुलीयानगर के देवानन्द पण्डित जिनका भक्तगण की पूजा कर प्राप्त हुए थे, उन्ही श्रीगौरचन्द्र का मैं स्मरण करता हूँ, जो केवल निरहंकार पण्डित गण की भक्ति द्वारा प्राप्त होते हैं ।

वृन्दारण्येक्षणकपटतो गौडदेशे प्रसूतिं दृष्ट्वा स्नेहाद् यवनकबलात् साग्रजं रुपमेव।
उद्धृत्यौढ्रं पुनरपि ययौ यः स्वतन्त्रः परात्मा तं गौराङ्गं स्वजनतरणे हृष्टचित्तं स्मरामि।।५३।।

५३-जिन स्वतंत्र परमेश्वर वृन्दावन दर्शन के बहाने गौड़ देश में निज, जननी को दर्शन पूर्वक कृपावशतः यवन बादशाह हुसैन शाह के चगुंल से अग्रज श्रीसनातन के साथ श्रीरुप को मुक्त कर उत्कल देश में वापस लौटे थे, स्वजन तारक हर्षित चित्त उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

सङ्गंहित्वा बहुविधनृणां भद्रमेकं गृहित्वा यात्रां वृन्दावनदृढमतिर्यश्चकारात्मतन्त्रः।
ऋक्षव्याघ्रप्रभृतिकपशून् मादयित्वात्मशक्त्या तं स्वानन्दैः पशुमतिहरं गौरचन्द्रं स्मरामि।।५४।।

५४-जो आत्म तंत्र पुरुष वृन्दावन दर्शन के लिए दृढ़मति होकर नाना प्रकार लोगों का संग परित्याग पूर्वक एक मात्र बलभद्र भट्टाचार्य को साथ में लेकर व्याघ्र, भालू आदि पशुगण को आत्मशक्ति बल से उन्मत्त कर गमन किए थे, निजआनन्द द्वारा पशुगण के चित्तहारी उन्हीं श्रीगौरचन्द्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

वृन्दारण्ये गिरिवरनदीन्ग्रामराजीं विलोक्य पूर्व क्रीडास्मरणविवशो भावपुञ्जैर्मुमोह।
तस्माद्भद्रो व्रजविपिनश्चालयामास यश्च तं गौराङ्गं निजजनवशं दीनमूर्तिं स्मरामि।।५५।।

५५-महाप्रभु श्रीवृन्दावन में गोवर्धन गिरी, यमुना नदी और (नन्द गाँव, वृषभानु पुर इत्यादि) ग्राम समूह दर्शन करने की दौरान पुर्व लीला स्मरण करते हुए भाव विह्वल हो कर मूर्छित होने लगे । उसी हेतु बलभद्र जिनको बज्र विपिन से स्थानांतरित किए थे उन्हीं निज जन वशीभूत, दीनमूर्ति श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

भाववावेशं पथिपरमहोवीक्ष्य तं भाग्यवन्तो म्लेच्छाः केचिच्छुमतिभबलाल्लेभिरे यत् प्रसादम्।
भक्तास्ते च प्रणयवशगा यत् प्रसादाद् बभूवुस्तं गौराङ्गं जनिमलहरं शुद्धमूर्तिं स्मरामि।।५६।।

५६-अहो! मार्ग में कई भाग्यवान म्लेच्छ (वर्णाश्रमहीनजाति) जिनका वही परम भावावेष के दर्शन उत्तम शुभमति से उनकी कृपालाभ कर भक्त हो गए थे, जाति दोष हारी अप्राकृत (पारलौकिक) देहधारी उन्हीं श्रीगौराङ्ग देव का मैं स्मरण करता हूँ ।

पुण्ये गङ्गांतपनतनया सङ्गमे तीर्थवर्ये रुपं विद्यां पररसमयीं शिक्षयामास यो वै।
प्रेमाणं गोकुलपतिगतं वल्लभाख्यं बुधश्च तं गौराङ्गं रसगुरुमणिं शास्त्रमूर्तिं स्मरामि।।५७।।

५७-जिन्होंने तीर्थ श्रेष्ठ पुण्य गंगा-यमुना संगम स्थल-प्रयाग में श्रीरुप को सबसे ऊंचा प्रेमरस की पूर्णज्ञान एवं वल्लभ भट्ट नामक पण्डित को गोकुलनाथ श्रीकृष्ण की प्रेम शिक्षा दी थी, सर्वश्रेष्ठ रसशिक्षक, शास्त्र के मूर्ति स्वरुप उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

काशीक्षेत्रे रसविरहितान् केवलाद्वैतपक्षान् प्रेम्नाप्लाव्य स्वजनकृपया यस्तु रुपाग्रजाय।
विष्णोर्भक्तिस्मृतिविरचने साधुशक्तिं व्यतारीत् वन्दे गौरं भजनविषये साधकानां गुरुं तम्।।५८।।

५८-जिन्होंने काशी क्षेत्र में निजजन प्रति कृपावशतः रसज्ञान हीन केवलाद्वैतवादी गण को प्रेम की बाढ़ लाकर सम्पूर्ण रुप से प्लावित किए थे और श्रीरुप के अग्रज श्रीसनातन को श्रीहरि भक्ति अर्थात् सेवा विषयक स्मृति शास्त्र रचना में उत्तम रुप शक्ति संचार किए थे, भजन विषय में साधकगण के गुरु उन्हीं श्रीगौराङ्ग की मैं वन्दना करता हूँ ।

धिक् गौराङ्गंप्रणतिरहितां शुष्कतर्कादिदग्धानित्यारभ्यप्रचुरवचनं शाङ्कराणां बभूव।
न्यासीशानां सदसि महतां यस्य पूजा तदाभृत् गौराङ्गं तं स्वसुखमथनानन्दमूर्तिं स्मरामि।।५९।।

५९-तदाकाले शंकर मतावलंबी विख्यात प्रधान संन्यासीगण की सभा में श्रीगौराङ्ग प्रणति रहीत शुष्क तर्कादि दग्ध भक्तोंगण को धिक, इस प्रकार प्रचुर वचन द्वारा मायावादी सन्यासीगण का धिक्कार हुई थी और जिनकी पूजा/अर्चना हुई थी उन्हीं प्रेमानन्द की मूर्ति श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

प्राप्यक्षेत्रं पुनरपि हरिर्भक्तवर्गं तुतोष रामानन्दप्रमुखसुजनान् सार्वभौमादिकान् यः।
प्रेमालापैर्हरिरसपरैर्यापयामास वर्षान् तं गौराङ्गं हरिरसकथास्वादपूर्णं स्मरामि।।६०।।

६०-जिन श्रीहरी ने पुनः श्रीक्षेत्र पहुँच कर राय रामानन्द-प्रमुख सज्जन सहित वासुदेव सार्वभौम-आदि भक्तगण को हर्षित किया था और कृष्ण रस-प्रधान स्नेह पूर्ण अलाप सहित अवशेष प्रकटकाल बीतये थे, उन्ही कृष्ण रसमय कथा आस्वादन पूर्ण श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

यत्पादाब्जं विधिशिवनुतं वीक्षितुं ते महान्तो वर्षे वर्षे रथपरिगतौ गौडदेशात् समेत्य।
प्रीतिं लब्ध्वा मनसि महतीमोढ्रदेशात् समीयुर्गौडीयानां परमसुहृदं तं यतीन्द्रं स्मरामि।।६१।।

६१-जिनका ब्रह्मा-शिव-वन्दित पाद पद्म दर्शन के लिये बंगदेश से महाजन समूह हर वर्ष रथयात्रा के अवसर पर समागत होते थे और हृदय में परम आनंद लाभ कर उत्कल देश से वापस लौटें थे, गौड़ीय गण के परम सुहृद उन्हीं (श्रीचैतन्य) सन्यासी वर का मैं स्मरण करता हूँ ।

निर्विण्णानां विपुलपतनं स्त्रीषु संभाषणं यत् तत्तद्दोषात् स्वमतचरकारक्षणार्थं य ईशः।
दोषात् क्षुद्रादपि लघुहरिं वर्जयित्वा मुमोद तं गौराङ्गं विमलचरितं साधुमूर्तिं स्मरामि।।६२।।

६२-निर्वाण प्राप्त संन्यासीगण के लिए स्त्रीलोक संभाषण महापतन के कारण इस प्रकार दोष से निज मतानुगामी जन के संरक्षण हेतु जो प्रभु सामान्य अपराध के लिये छोटे-

हरिदास को छोड़ कर संतुष्ट हुए थे (अर्थात् दु:खी नहीं हुए), विमल-चरित साधुमूर्ति उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

दैवाद्धीनान्वयजनिवतां तत्त्वबुद्धिप्रभावादाचार्यत्वं भवति यदिदं तत्त्वमेकं सुगूढम्।
प्रद्युम्नाय प्रचुरकृपया ज्ञापयामास यस्तत् तं गौराङ्गं गुणमधुकरं जाड्यशून्यं स्मरामि।।६३।।

६३-अंतीत कर्म हेतु जिन लोगों ने निम्न जाति कुल में जन्म लाभ करते हैं तत्व ज्ञान प्रभाव द्वारा उन्हीं लोगों का भी आचार्यत्व सिद्ध हो सकता है । इस गूढ़ तत्व का जिन्होंने प्रचुर कृपावशत: श्रीप्रद्युम्न मिश्र को सूचित किए थे, मूढ़ जड़ विचार रहित मधुकर सदृश गुणग्राही उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

वात्सल्येन स्वभजनवशात् दासगोस्वामिनं यस्तत्त्वज्ञानं भजनविषये शिक्षयामास साक्षात्।
सिन्धोस्तीरे चरमसमये स्थापयामास दासं तं गौराङ्गं स्वचरणजुषां बन्धुमूर्तिं स्मरामि।।६४।।

६४-श्रीरघुनाथदास गोस्वामी का निज भजन दर्शन द्वारा वशीभूत हो कर उन्हीं गोस्वामी कों जिन्होंने वात्सल्य सहित भजन विषयक तत्वज्ञान स्वयं शिक्षा दिए थे, और अंतिम काल में श्रीहरिदास को जिन्होंने स्नेह पूर्वक स्वयं समुद्रतट पर समाधिष्ठ किया था, स्वचरण सेवकगण के बंधु मूर्ति उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

पुरीं रामाख्यं यो गुरुजनकथा निन्दनपरं सदोपेक्ष्य भ्रान्तं कलिकलुषकूपेगतमिह।
अमोघं स्वीचक्रे हरिजनकृपालेशबलत: शचीसूनु: शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।६५।।

६५-इसी नीलाचल में जिन्होंने निज गुरुदेव तथा उनके उपदेश की निन्दाकारी, भ्रांत, कलि अपराध-कुआं में पतित रामचन्द्र पुरी की सर्वदा उपेक्षा किये थें परंतु निज प्रभावद्वारा वैष्णवगण के नाममात्र कृपापात्र अमोघदास (सार्वभौम का दामाद को जिन्होंने ग्रहण किए थे, उन्हीं श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित (होने के लिए कामना करता हूँ) हों ।

सनातनं कण्डुरसप्रपीडितं स्पर्शेन शुद्धं कृपया चकार य:।
स्वनाशबुद्धिं परिशोधयन्नहो स्मरामि गौरं नवखण्डनागरम्।।६६।।

६६-अहो! जिन्होंने खुजली घावें की बीमारी से पीड़ित श्रीसनातन गोस्वामी को आत्मघात बुद्धि से शोधनपूर्वक कृपावशत: स्पर्श मात्र निरोग किया था, उन्हीं नवद्वीप नागर श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

गोपीनाथं नरपतिबलाद्यो ररक्षात्मतन्त्रो रामानन्दानुजनिजजनं शिक्षयन् धर्मतत्त्वम्।
पापैर्लब्धं धनमिह सदा त्याज्यमेव स्वधर्मात् तं गौराङ्गं स्वजनशिवदं भद्रमूर्तिं स्मरामि।।६७।।

६७-स्वधर्म में स्थित हो कर पापलभ्ध धन सदा तज्य, यही धर्मतत्व, यह कर्तव्य ज्ञान शिक्षा धनपूर्वक जो स्वतंत्र पुरुष निजजन और श्रीरामानन्द के कनिष्ठ भ्राता गोपीनाथ को नृपति जैसे बल द्वारा रक्षा किए थे, निज जनगण के मंगल विधाता मंगलमूर्ति उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

उपायनं राघवतः समादृतं पुनः पुनः प्राप्तमपि स्वदेशतः।
स्वभक्ततोयेन परात्परात्मना तमेव गौरं सततं स्मराम्यहम्।।६८।।

६८-जो परात्पर ईश्वर निज भक्त राघव पण्डित द्वारा निज देश से लाया उपहार पुनः पुनः आदर सहित प्राप्त किए थे, उन्हीं श्रीगौराङ्ग का मैं स्मरण करता हूँ ।

तैलं नाङ्गीकृतं येन संन्यासधर्मरक्षिणा । जगदानन्ददत्तञ्च स्मरामि तं महाप्रभुम्।।६९।।

६९-(लेकीन) जिन्होंने संन्यास आचरण रक्षा हेतु श्रीजगदानन्द द्वारा दिया गया तेल ग्रहण नहीं किए थे, उन्हीं श्रीमहाप्रभू का मैं स्मरण करता हूँ ।

जगन्नाथागारे गरुडसदने स्तंभनिकटे ददर्श श्रीमूर्तिं प्रणयविवशा कापि जरती।
समारुह्य स्कन्धं यदमलहरेस्तुष्टमनसः शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।७०।।

७०-श्रीजगन्नाथदेव मंदिर में गरुड़सदन स्तम्भ के निकट दण्डायमान श्रीगौरहरि के स्कन्ध पर चढ़ कर कोई एक प्रेमाभिभूत वृध्दा श्रीजगन्नाथदेव का श्रीमूर्ति दर्शन की थी । वैसा श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों ।

पुरीदेवे भक्तिं गुरुचरणयोग्यां सुमधुरां दयां गोविन्दाख्ये विशदपरिचर्याश्रितजने।
स्वरुपे यो प्रीतिं मधुररसरुपां ह्यकुरुत शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।७१।।

७१-जिन्होंने निज गुरुदेव श्रीपरमानन्द पुरी के प्रति उपयुक्त सुमधुर भक्ति प्रदर्शण, श्रीगोविन्द नामक विशुद्ध सेवाश्रित भक्त को दया और श्रीस्वरुप दामोदर के निकट श्रेष्ठ मधुर रस का प्रकाशित किया था, वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों ।

दधानः कौपीनं वसनमरुणं शोभनमयं सुवर्णाद्रेः शोभां सकलसुशरीरे दधदपि।
जपन् राधाकृष्णं गलदुदकधाराक्षियुगलः शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।७२।।

७२-कोपिन और उज्जवल अरुणवर्ण वस्त्र परिहित जो सुचारु देह स्वर्ण पर्वत के शोभाधारी और विगलित अश्रुधारा से प्लावित नयनयुगल सहित राधाकृष्ण नाम कीर्तनकारी वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों ।

मुदागायन्नुच्चैर्मधुरहरिनामावलिमसौ नटन् मन्दं मन्दं नगरपथगामि सहजनैः।
वदन् काक्वा रेरे वदहरिहरित्यक्षरयुगं शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।७३।।

७३-संगीगण सहित मधुर हरिनाम समूह आनंद के साथ उच्च स्वर में कीर्तन पूर्वक - "ओहे! हरि हरि यही दो शब्द बोल"- यही अनुराग सहित बोल बोल कर विलम्बित लय में नृत्य करते हुए नगर के पथ-पथ में भ्रमण कारी वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण काल में नित्यकाल उदित हों ।

रहस्यं शास्त्राणां यदपरिचितं पूर्व विदुषां श्रुतेर्गूढं तत्त्वं दशपरिमितं प्रेमफलितम्।
दयालुस्तद्योऽसौ प्रभुरतिकृपाभिः समवदत् शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे ।।७४।।

७४-सकल शास्त्र के गूढ़ मर्म, जो पूर्व पण्डित गण के अज्ञात, जो केवल भक्ति द्वारा बोधगम्य वेदशास्त्र के उसी प्रकार दस सिद्धान्त जिन्ह दयामय प्रभु परम कृपा-पूर्वक उपदेश किये थे, वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों ।

आम्नायः प्राह तत्त्वं हरिमिह परमं सर्वशक्तिं रसाब्धिं
तद्भिन्नांशांश्च जीवान् प्रकृतिकबलितान् तद्विमुक्तांश्च भावात्।
भेदाभेदप्रकाशं सकलमपि हरेः साधनं शुद्धभक्तिं
साध्यं यत्प्रीतिमेवेत्युपदिशति हरौ गौरचन्द्रं भजे तम् ।।७५।।

७५-इस संसार में सद्गुरु परम्परा द्वारा प्राप्त वेदशास्त्र श्रीहरिको परम तत्व, सकल शक्ति के आधार एवं रससागर कहते हैं । जीवगण को श्रीहरिके विभिन्नांश, भगवान से बहिर्मूख हेतु जीवगण प्रकृति द्वारा कवलित होने का योग्य हैं एवं भाव व रति की उदय होनेपर वह माया का कबल से सम्पूर्ण मुक्त होने योग्य हैं । समस्त वस्तू युगपत् श्रीहरि के भेदाभेद प्रकाश हैं । श्रीहरि के शुद्ध भक्ति को साधन एवं श्रीहरि प्रेम को साध्य कहा हैं । यह जो श्रीहरि श्रीगौरचन्द्र शिक्षा देते है उनका मैं भजन करता हूँ ।

स्वतः सिद्धो वेदो हरिदयितवेधः प्रभृतितः प्रमाणं सत्प्राप्तं प्रमितिविषयान् तान्नवविधान्।
तथा प्रत्यक्षादिप्रमितिसहितं साधयति नः न युक्तिस्तर्काख्या प्रविशति तथा शक्तिरहिता।।७६।।

७६-श्रीहरि के प्रिय सेवक ब्रह्मादि के क्रम में प्राप्त निर्दोष एवं नित्य प्रमाण स्वयं सिद्ध वेद - उसके तुल्य अर्थात वेदानुगत्य हेतु निर्दोष प्रत्यक्षादि प्रणाम सहित वे नौ प्रकार के प्रमेय का प्रमाण हमारे लिए प्रमाणित करते हैं । इस तरह से निर्दोष प्रमाण सामर्थ्य रहित केवल तर्क नामक युक्ति, प्रमाण श्रेणी में प्रवेश का अधिकार प्राप्त नही करती ।

हरिस्त्वेकं तत्त्वं विधिशिवसुरेसप्रणमितः यदेवेदं ब्रह्मोपनिषदुदितं तत्तनुमहः।
परात्मा तस्यांशो जगदनुगतो विश्वजनकः सवै राधाकान्तो नवजलदकान्तिश्चिदुदयः।।७७।।

७७-ब्रह्मा, शिव, इन्द्र के द्वारा पूजित श्रीहरि ही अद्वितीय सत्य वस्तु; मायातीत ब्रह्म श्रीहरि के देह की प्रभा है, वे ही जगत के सृष्टि कर्ता; जगत में अनु प्रविष्ट परमात्मा, श्रीहरि का अंश है, वे ही श्रीहरि चिन्मय स्वरुप में नवनीरद कान्ति राधाकान्त श्रीकृष्ण हैं ।

पराख्याया: शक्तेरपृथगपि स स्वे महिमनि स्थितो जीवाख्यांस्वामचिदभिहितां तां त्रिपदिकाम्।
स्वतन्त्रेच्छ: शक्तिं सकलविषये प्रेरयति यो विकाराद्यै: शून्य: परमपुरुषोऽसौ विजयते।।७८।।

७८-वही परम पुरुष श्रीकृष्ण उनकी परा-शक्ति से अभिन्न होते हुए भी अपने अखण्ड स्वरुप में अवस्थित रहकर स्वेच्छामय रुप में - स्वरुप शक्ति, जीव शक्ति, जड़ शक्ति इन तीन परा शक्ति का सारे विषय समुह नियंत्रन करते हैं । परंतु स्वंय विंकारादिशून्य होकर जय युक्त हैं ।

सवै ह्लादिन्याश्च प्रणयविकृतेर्ह्लादनरत: तथा संविच्छक्तिप्रकटितरहोभाव रसित:।
तथा श्रीसन्धिन्या कृतविशदतद्धामनिचये रसांभोधौ मग्नौ व्रजरसविलासी विजयते।।७९।।

७९-वही श्रीकृष्ण, परा शक्ति के सन्धिनी-वृत्ति द्वारा प्रकाशित निर्मल कृष्णधाम है; सारे सम्बिद् वृत्ति द्वारा प्रकाशित गूढ़ गोपनीय भाव आस्वादन करते हैं एवं उस रुप हलादिनी वृत्ति कृत प्रेम परिनति के आनन्द विधान में व्याप्त रहकर रस समुद्र में मग्न और व्रज के विविध रसों में विलासशील होकर विजयी होते हैं ।

स्फुलिङ्गा ऋद्धाग्रेरिव चिदणवो जीवनिचया हरे: सूर्यस्यैवापृथगपितु तद्भेदविषया:।
वशे माया यस्य प्रकृतिपतिरेवेश्वर इह सजीवोमुक्तोऽपि प्रकृतिवशयोग्य: स्वगुणत: ।।८०।।

८०-जिस प्रकार चिंगारी अग्नि से और किरणें सूर्य से सम्बन्धित है उसी प्रकार समस्त जीव भगवान् श्रीहरि से अपृथक होते हुए भी भिन्न है । माया जिनके अधीन है वे ही मायाधीश श्री भगवान् हैं । जीव अपनी स्वरुप अवस्था में मायातीत होते हुए भी अपने धर्मानुसार माया के वशीभूत होने के विषय होते हैं ।

स्वरुपार्थैर्हीनान् निजसुखपरान् कृष्णविमुखान् हरेर्माया दण्ड्यान् गुणनिगडजालै: कलयति।
तथा स्थुलैर्लिङ्गैर्द्विविधवरणै: क्लेशनिकरैर्महाकर्मालानैर्नयति पतितान् स्वर्गनिरयौ।।८१।।

८१-श्रीहरि (शक्ति) की जड़ माया (महामाया) कृष्णविमुख निज स्वरुप ज्ञानके प्रयोजन-रहित और निज सुख भोग में तत्पर जीवोको त्रिगुण रुप श्रंखला द्वारा जकड कर दण्ड देती है तथा स्थूल एवं सूक्ष्म इन दो प्रकार के शरीर रुप आवरणों द्वारा आबद्ध करती है और दु:खों से भरे हुए विशाल कर्म बन्धनों द्वारा उन्हीं जीवोंको स्वर्ग एवं नरक में लेजाती है ।

यदा भ्रामं भ्रामं हरिरसगलद् वैष्णवजनं
कदाचित् संपश्यन् तदनुगमने स्याद्रुचियुत: ।
तदा कृष्णावृत्त्या त्यजति शनवैर्मायिकदशां
स्वरुपं विभ्राणो विमलरसभोगं स कुरुते ।।८२।।

८२-जब (वह जीव विभिन्न योनियों में) निरन्तर विचरण करते हुए किसी वक्त कृष्णप्रेम रस विगलित वैष्णव का दर्शन करते है और उनके अनुगमन में विशिष्ट रुचि रखते हैं तब वह कृष्णनाम का निरंतर किर्तन द्वारा धीरे धीरे मायाबद्ध दशा को त्यागता है और स्वरुप प्राप्त कर निर्मल श्रीकृष्ण सेवानन्द आस्वादन करते हैं ।

हरे: शक्ते: सर्वं चिदचिदखिलं स्यात्परिणति: विवर्तं नो सत्यं श्रुतिमितिविरुद्धं कलिमलम्।
हरेर्भेदाभेदौ श्रुतिविहिततत्त्वं सुविमलं तत: प्रेम्न: सिद्धिर्भवति नितरां नित्यविषये।।८३।।

८३-समस्त चेतन एवं अचेतन जगत श्रीहरि की शक्ति का रुपान्तरण है; किंतु वह श्रुति शास्त्र के विरुद्ध और कलि के मल स्वरुप विवर्तवाद सूचित सत्य नेही है । श्रुतिशास्त्र श्रीहरि ने युगपत् भेद और अभेद (अर्थात् अचिन्त्य भेदाभेद सिद्धान्त) विमल तत्त्व को निर्धारित करते हैं एवं इस तत्त्व के द्वारा नित्य वस्तु में प्रीति की पूर्णता सिद्धि होती है ।

श्रुति: कृष्णाख्यानं स्मरणनतिपूजाविधिगणास्तथा दास्यं सख्यं परिचरणमप्यात्मददनम्।
नवाङ्गानि श्रद्धा-पवितहृदय: साधयति वा व्रजे सेवालुब्धो विमलरसभावं स लभते।।८४।।

८४-जो जीव इन श्रवण, कृष्ण किर्तन, स्मरण, वन्दन, अर्चन, विधान समूह, दास्य, सख्य, पाद सेवन और आत्म निवेदन - नौ प्रकार (नवधा) भक्ति के अंगों का श्रद्धा पुर्वक प्रत्येक दिन सेवा करते हैं वह विशुद्ध प्रेम भाव (रति) को प्राप्त करते हैं ।

स्वरुपावस्थाने मधुररसभावोदय इह व्रजे राधाकृष्ण स्वजनजनभावं हृदि वहन्।
परानन्दे प्रीतिं जगदतुल संपत्सुखमहो विलासाख्ये तत्त्वे परमपरिचर्यां स लभते।।८५।।

८५-इसी जगत में (जीवन काल में) निज स्वरुप में स्थित होकर और मधुर रस भाव का उद्‌य होने पर वही जीव ब्रज में श्री श्रीराधाकृष्ण के स्वजनरुप सेवक भाव हृदय में धारण करके जड़ जगत में अतुलनीय संपद सुख तथा कृष्ण-प्रेमानन्द में अनुराग और सदा श्री श्रीराधाकृष्ण विलास विषय में श्रेष्ठ सेवा प्राप्त होते हैं ।

प्रभु: क: को जीव: कथमिदमचिद्विश्वमिति वा विचार्यैतानर्थान् हरिभजनकृच्छास्त्रचतुर:।
अभेदाशां धर्मान् सकलमपराधं परिहरन् हरेर्नामानन्दं पिवतिहरिदासो हरिजनै:।।८६।।

८६-श्रीहरि भजनकारी शास्त्र निपुण हरि भक्त - प्रभु कौन है? जीव कौन है? कहाँ से ये जड़ विश्व उत्पन्न हुए? यही सकल विषय विचारपूर्वक मुक्ति की आकांक्षा, अन्य सकल धर्म और सर्व प्रकार अपराध परित्याग कर श्रीहरि भक्त के सगंत में श्रीहरि के नाम-रस पान करने लगते हैं ।

संसेव्य दशमूलं वै हित्वाऽविद्यामयं जनः। भावपुष्टिं तथा तुष्टिं लभते साधुसङ्गतः।।८७।।

८७-यही दश मूल के सम्यक सेवा पूर्वक लोग अविद्या रोग त्याग कर साधुसंग में भावोदय तथा भगवत स्वरुप स्फूर्ति और प्रेम भक्ति-सुख लाभ करते हैं।

इतिप्रायां शिक्षां चरणमधुपेभ्यः परिदिशन् गलन्नेत्रांभोभिः स्नपितनिजदीर्घोज्ज्वलवपुः।
परानन्दाकारो जगदतुलबन्धुर्यतिवरः शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।८८।।

८८-निज चरण भृंग गण को इस प्रकार उपदेश पूर्ण शिक्षा प्रदान-कारी, विगलित अश्रुधारा पूरित, निज दीर्घ उज्जवल देह-विशिष्ट प्रेमानन्द-मूर्ति, जगत के अनुपम बन्धु, सन्यासीवर वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों।

गतिर्गौडीयानामपिसकलवर्णाश्रमजुषां तथा चौढ्रीयानामतिसरलदैन्याश्रितहृदाम्।
पुनः पाश्चात्यानां सदयमनसां तत्त्वसुधियां शचीसूनुः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।८९।।

८९-अतः सकल वर्ण तथा आश्रम के अंतर्गत गौड़ीय गण उसी तरह अति सरल तथा दीन हृदय विशिष्ट उत्कल देशवासी गण के एवं दयालु हृदय, तत्त्वानुरागी पश्चिम देशवासी गण के आश्रय स्थल वही श्रीशचिनन्दन मरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों।

अहोमिश्रागारे स्वपतिविरहोत्कण्ठहृदयः श्लथात् सन्धेर्दैर्घ्यंदधदतिविशालं करपदोः।
क्षितौ धृत्वा देहं विकलितमतिर्गद्गदवचः शचीसूनुः साक्षात् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।९०।।

९०-अहो! निजपति श्रीकृष्ण के विरह से उत्कण्ठित हृदय में शिथिल देह सन्धि हेतु अत्याधिक दीर्घ हाथों और पैरों विशिष्ट अपनी देह काशी मिश्र के गृह में भूमि पर स्थापन कर संज्ञाहीन हुए और गद्गद् (अव्यक्त) वाक्य युक्त वही श्रीशचिनन्दन स्मरण पथ में साक्षात् उदित हों।

गतो बद्धद्वारादुपलगृहमध्याद्बहिरहो गवां कालिङ्गानामपिसमतिगच्छन् वृतिगणम्।
प्रकोष्ठे सङ्कोचाद्वत निपतितः कच्छप इव शचीसूनुः साक्षात् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।९१।।

९१-आश्चर्य! बद्ध द्वार प्रस्तर गृह मध्य से निकल कर और प्राचिर (घर की सीमा) समूह भी अतिक्रम (लाँघ) कर कलिंग देशी गाय-गण के गौशाला में उपस्थित हुए। अंग संकोच हेतु कछुए की तरह पड़े हुए वही श्रीशचिनंदन साक्षात् मेरे स्मरण पथ में उदित हों।

व्रजारण्यं स्मृत्वा विरहविकलान्तर्विलपितो
मुखं संधृष्यायं रुधिरमधिकं तद्दधदहो।
क्वमे कान्तः कृष्णो वदवदवदेति प्रलपितः
शचीसूनुः साक्षात् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे।।९२।।

९२-अहो! जिन्होंने ब्रज वन स्मरण हेतु विरह विहवल हृदय से विलाप युक्त अवस्था में दीवार पर मुख घर्षण कर उनके मुख पर प्रचुर रक्त धारण पूर्वक "मेरे प्रियतम कृष्ण कहाँ हैं बोल बोल बोल" इस प्रकार प्रलाप किए थे उन्हीं श्रीशचिनंदन मेरे स्मरण पथ में साक्षात् उदित हों ।

पयोराशेस्तीरे चटकगिरिराजे सिकतिले
व्रजन् गोष्ठे गोवर्द्धनगिरिपतिं लोकितुमहो ।
गणैः सार्द्धं गौरोद्रतगतिविशिष्टः प्रमुदितः
शचीसूनुः साक्षात् स्मरणपदवीं गच्छतु स मे ।।९३।।

९३-अहो! समुद्र तट पर निजगण सहित जाते जाते श्रीगौर सुंदर ब्रज धाम स्थित गिरिराज श्रीगोवर्धन के दर्शन करने के भाव में आकर बालू मय गिरिवर चटक की ओर द्रुतगति धावित हो कर विहवल हुए थे; वही श्रीशचिनन्दन मेरे स्मरण पथ में साक्षात् उदित हों ।

यस्यानुकंपा सुखदा जनानां संसारकूपाद्रघुनाथदासम् ।
उद्धृत्यगुञ्जाः शिलया ददौ सा तं गौरचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या ।।९४।।

९४-जिनकी जीव-सुखदायिनी दया श्रीरघुनाथदास गोस्वामी को संसाररुप कुआं से उद्धार कर उनको शिला सहित गुञ्जमाला प्रदान की थी, उन्हीं श्रीगौरचन्द्र का मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूँ ।

सद्भक्तिसिद्धान्तविरुद्धवादान् वैरस्य भावांश्च बहिर्मुखानाम्।
सङ्गं विहायाथ सुभक्तगोष्ठ्यां रराज यस्तं प्रणमामि गौरम्।।९५।।

९५-जिन्होंने शुद्ध भक्ति सिद्धांत के विरुद्ध मतवादी और रसदूष्ट (मैले मन वाले) भाव सकल एवं कृष्ण बहिर्मुखगण का संग त्याग कर उत्तम भक्तगण की गोष्ठी में विराज करते थे उन्हीं श्रीगौरचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ ।

नामानि विष्णोर्बहिरङ्गपात्रे विस्तीर्य लोके कलिपावनोऽभृत्।
प्रेमान्तरङ्गाय रसं ददौ यस्तं गौरचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या।।९६।।

९६-जो जगत में बहिरंग लोगों के बीच में कृष्ण नाम समूह वितरण कर कलिपावन हुए थे एवं जिन्होंने प्रेमिक भक्तों को भक्तिरस प्रदान किया था, उन्हीं श्रीगौरचन्द्र का मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूँ ।

नामापराधं सकलं विनाश्य चैतन्यनामाश्रित मानवानाम्।
भक्तिं परां यः प्रददौ जनेभ्य स्तं गौरचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या।।९७।।

९७-श्रीचैतन्य नामश्रित भक्तगण के सर्व प्रकार नामापराध दूर कर जिन्होंने लोगों को प्रेम भक्ति प्रदान की थी उन्हीं श्रीगौरचन्द्र को में भक्ति सहित प्रणाम करता हूँ ।

इत्थं लीलामयवरवपुः कृष्णचैतन्यचन्द्रो
वर्षान् द्विद्वादशपरिमितान् क्षेपयामास गार्ह्ये ।
संन्यासे वै समपरिमितं यापयामास कालं
वन्दे गौरं सकलजगतामाश्रमाणां गुरुं तम् ।।९८।।

९८-लीलामय उत्तम देहधारी जो श्रीकृष्ण चैतन्य चन्द्र इस प्रकार गृहस्थाश्रम में चौबीस साल यापन किए थे एवं सन्यास (धर्म) आश्रम में समकाल व्यतीत किए थे, सकल जगत और आश्रम के गुरु उन्हीं श्रीगौराङ्ग की मैं वन्दना करता हूँ ।

दरिद्रेभ्यो वस्त्रं धनमपि ददौ यः करुणया
बुभुक्षुन् योन्नाद्यैरतिथिनिचयान् तोषमनयत् ।
तथा विद्यादानैः सुखमतिशयं यः समभजत्
स गौराङ्गः शश्वत् स्मरणपदवीं गच्छतु मम ।।९९।।

९९-जिन्होंने करुणावशतः दरिद्रगण को वस्त्र और धन दान किए थे, जिन्होंने अहारपार्थी (भूखे) अतिथिगण को अन्नादि द्वारा संतोष प्रदान किए थे, उसी प्रकार जिन्होंने विद्या दान कर अतिशय आनंद लाभ किए थे, वही श्रीगौराङ्ग मेरे स्मरण पथ में नित्यकाल उदित हों ।

संन्यासस्य प्रथमसमये तीर्थयात्राच्छलेन
वर्षान् यो वै रसपरिमितान् व्याप्य भक्तिं ततान ।
शेषानष्टान् वसुविधुमितान् क्षेत्रदेशेस्थितो यः
वन्दे तस्य प्रकटचरितं योगमायाबलाढ्यम् ।।१००।।

१००-जिन्होंने सन्यास जीवन के प्रथम भाग में तीर्थ भ्रमण के बहाने छः साल दौरान भक्ति प्रचार किया था और जिन्होंने अवशिष्ट अठारह साल श्रीक्षेत्र में निवास किया था, उनकी योगमाया शक्ति द्वारा विरचित दिव्य प्रकट लीला की मैं वन्दना करता हूँ ।

हाहा कष्टं सकलजगतां भक्तिभाजां विशेषं
गोपीनाथालयपरिसरे कीर्तने यः प्रदोषे ।
अप्राकट्यं वतसमभजन् मोहयन् भक्तनेत्रं
वन्दे तस्याप्रकटचरितं नित्यमप्राकृतं तत् ।।१०१।।

१०१-हाय! हाय! सकल जगत के विशेष रुप से भक्ति पथ सेवीगण के दुःख का विषय हैं; हाय! जिन्होंने श्रीटोटा गोपीनाथ के मंदिर प्रदेश में संध्याकालीन कीर्तन दौरान भक्तगण के चक्षु मोहित कर अप्रकट हुए थे, उनकी वही अप्राकृत अप्रकटलीला की मैं सर्वदा वन्दना करता हूँ ।

भक्ता ये वै सकलसमये गौरगाथामिमां नो
गायन्त्युच्चैर्विगलितहृदो गौरतीर्थे विशेषात् ।
तेषां तूर्णं द्विजकुलमणिः कृष्णचैतन्यचन्द्रः
प्रेमावेशं युगलभजने यच्छति प्राणबन्धुः ।।१०२।।

१०२-जो सब भक्तगण विगलित हृदय में सदा हमारे यहीं श्री-गौर-गीति-विशेष रुप से श्रीगौर सुंदर के लीला स्थल में उच्च उच्च स्वर सहित कीर्तन करते हैं, द्विज कुलमणि जीवतुल्य बन्धु श्रीकृष्ण चैतन्य चन्द्र उनको श्रीयुगल सेवा में शीघ्र प्रेमावेश प्रदार करते हैं ।

षट्खवेदप्रमे शाके कार्तिके गोद्रुमे प्रभोः ।
गीता भक्तिविनोदेन लीलेयं लोकपावनी ।।१०३।।

१०३-श्रीनवद्वीप मण्डल के अंतर्गत श्रीगोद्रुम द्वीप में ४०६ श्रीगौराब्द के कार्तिक मास में श्रीमन महाप्रभु की यही लोकपावनी लीला श्रीभक्ति विनोद ठाकुर द्वारा संक्षेप में महिमा कृत हुई ।

यत्प्रेममाधुर्यविलासरागान्नन्दात्मजो गौडविहारमाप ।
तस्यै विचित्रा वृषभानुपुत्र्यै लीलामया तस्य समर्पितेयम् ।।१०४।।

१०४-श्रीनन्दनन्दन ने जिनके प्रेममाधुर्य विलास में अनुराग वशतः श्रीनवद्वीप लीला की थी उन्हीं श्रीवृषभानु नंदिनी को श्रीकृष्ण की यही विचित्र लीला गाथा मैं (श्रीभक्ति विनोद ठाकुर) समर्पित करता हूँ ।

इति श्रीश्रीलठक्कुरभक्तिविनोद विरचितं श्रीश्रीगौराङ्गस्मरणमङ्गलस्तोत्रम् समाप्तम् ।।



श्रीहरि:

श्रीश्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम् ।

श्रीश्रीराधिकायै नमः

श्रीपार्वत्युवाच

देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक । यद्यस्ति मयि कारूण्यं यद्यस्ति मयि ते दया ।।
यद्यत् त्वया निगदितं तत्सर्व मे श्रुतं प्रभो । गुह्याद् गुह्यतरं यत्तु यत्ते मनसि काशते ।।
त्वया न गदितं यत्तु यस्मै कस्मै कदाचन । तन्मां कथय देवेश सहस्रं नाम चोत्तमम् ।।
श्रीराधाया महादेव्या गोप्या भक्तिप्रसाधनम् । ब्रह्माण्डकर्त्री हर्त्री सा कथं गोपीत्वमागता ।।

श्रीमहादेव उवाच

श्रृणु देवि विचित्रार्थां कथां पापहरां शुभाम् । नास्ति जन्मानि कर्माणि तस्या नूनं महेश्वरि ।।
यदा हरिश्चरित्राणि कुरूते कार्यगौरवात् । तदा विधत्ते रुपाणि हरिसांनिध्यसाधिनी ।।
तस्या गोपीत्वभावस्य कारणं गदितं पुरा । इदानीं श्रृणु देवेशि नाम्नां चैव सहस्रकम् ।।
यन्मया कथितं नैव तन्त्रेष्वपि कदाचन । तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामिभक्त्या धार्यं मुमुक्षुभि: ।।
मम प्राणसमा विद्या भाव्यते मे त्वहर्निशम् । श्रृणुष्व गिरिजे नित्यं पठस्व च यथामति ।।
यस्याः प्रसादात् कृष्णस्तुगोलोकेशः परः प्रभुः । अस्या नामसहस्रस्य ऋषिर्नारद एव च ।।
देवी राधा परा प्रोक्ता चतुर्वर्गप्रसाधिनी ।।

अथ श्रीश्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीराधा राधिका कृष्णवल्लभा कृष्णसंयुता । वृन्दावनेश्वरी कृष्णप्रिया मदनमोहिनी ।।
श्रीमती कृष्णकान्ता च कृष्णानन्दप्रदायिनी । यशस्विनीयशोगम्या यशोदानन्दवल्लभा ।।
दामोदरप्रिया गोपी गोपानन्दकरी तथा । कृष्णांगवासिनी हृद्या हरिकान्ता हरिप्रिया ।।
प्रधानगोपिका गोपकन्या त्रैलोक्यसुन्दरी । वृन्दावनाविहारिणी विकसितमुखाम्बुजा ।।
गोकुलानन्दकर्त्री च गोकुलानन्ददायिनी । गतिप्रदा गीतगम्या गमनागमनप्रिया ।।
विष्णुप्रियाविष्णुकान्ताविष्णोरंकनिवासिनी । यशोदानन्दपत्नी च यशोदानन्दगेहिनी ।।
कामारिकान्ता कामेशी कामलालसविग्रहा । जयप्रदा जया जीवा जीवानन्दप्रदायिनी ।।
नन्दनन्दनपत्नी च वृषभानुसुता शिवा । गणाध्यक्षा गवाध्यक्षा गवां गतिरनुत्तमा ।।
काञ्चनाभा हेमगात्रा काञ्चनांगदधारिणी । अशोका शोकरहिता विशोका शोकनाशिनी ।।
गायात्री वेदमाता च वेदातीता विदुत्तमा । नीतिशास्त्रप्रिया नीतिर्गतिर्मतिरभीष्टदा ।।

वेदप्रिया वेदगर्भा वेदमार्गप्रवर्द्धिनी । वेदगम्या वेदपरा विचित्रकनकोज्ज्वला ।।
तथोज्ज्वलप्रदानित्यातथैवोज्ज्वलगात्रिका । नन्दप्रियानन्दसुताराध्यानन्दप्रदाशुभा ।।
शुभांगी विमलांगी च विलासिन्यपराजिता । जननी जन्मशुन्या च जन्ममृत्युजरापहा ।।
गतिर्गतिमतां धात्री धातृयानन्द प्रदायिनी । जगन्नाथप्रिया शैलवासिनी हेमसुन्दरी ।।
किशोरी कमला पद्माहस्ता पयोददा । पयस्विनी पयोदात्री पवित्रा सर्वमंगला ।।
महाजीवप्रदा कृष्णकान्ता कमलासुन्दरी । विचित्रवासिनी चित्रवासिनी चित्ररुपिणी ।।
निर्गुणा सुकुलीना च निष्कुलीना निराकुला । गोकुलान्तरगेहा च योगानन्दकरी तथा ।।
वेणुवाद्या वेणुरतिर्वेणुवाद्यपरायणा । गोपालस्यप्रिया सौम्यरूपा सौम्यकुलोद्वहा ।।
मोहामोहा विमोहा च गतिनिष्ठा गतिप्रदा । गीर्वाणवन्द्या गीर्वाणा गीर्वाणगणसेविता ।।
ललिता च विशोका च विशाखा चित्रमालिनी । जितेन्द्रियाशुद्धसत्त्वा कुलीना कुलदीपिका ।।
दीपप्रिया दीपदात्री विमला विमलोदका । कान्तारवासिनी कृष्णा कृष्णचन्द्रप्रिया मतिः ।।
अनुत्तरा दुःखहन्त्री दुःखकर्त्री कुलोद्वहा । मतिर्लक्ष्मीर्धृतिर्लज्जा कान्तिः पुष्टिः स्मृतिः क्षमा ।।
क्षीरोदशायिनी देवी देवारिकुलमर्दिनी । वैष्णवी च महालक्ष्मीः कुलपूज्या कुलप्रिया ।।
संहर्त्री सर्वदैत्यानां सावित्री वेदगामिनी । वेदातीता निरालम्बा निरालम्बगणप्रिया ।।
निरालम्बजनैः पूज्या निरालोका निराश्रया । एकांगी सर्वगा सेव्या ब्रह्मपत्नी सरस्वती ।।
रासप्रिया रासगम्या रासाधिष्ठातृदेवता । रसिका रसिकानन्दा स्वयं रासेश्वरी परा ।।
रासमण्डलमध्यस्था रासमण्डलशोभिता । रासमण्डलसेव्या च रासक्रीडामनोहरा ।।
पुण्डरीकाक्षनिलया पुण्डरीकाक्षगेहिनी । पुण्डरीकाक्षसेव्या च पुण्डरीकाक्षवल्लभा ।।
सर्वजीवेश्वरी सर्वजीववन्द्या परात्परा । प्रकृतिः शम्भुकान्ता च सदाशिवमनोहरा ।।
क्षुत् पिपासा दया निद्रा भ्रान्तिः श्रान्तिः क्षमाकुला । वधुरूपा गोपपत्नी भारती सिद्धयोगिनी ।।
सत्यरूपा नित्यरूपा नित्यांगी नित्यगेहिनी । स्थानदात्री तथा धात्री महालक्ष्मीः स्वयं प्रभा ।।
सिन्धुकन्यास्थानदात्री द्वारकावासिनी तथा । बुद्धिः स्थितिः स्थानरूपा सर्वकारणकारणा ।।
भक्तिप्रिया भक्तगम्या भक्तानन्दप्रदायिनी । भक्तकल्पद्रुमातीता तथातीतगुणा तथा ।।
मनोऽधिष्ठातृदेवी च कृष्णप्रेमपरायणा । निरामया सौम्यदात्री तथा मदनमोहिनी ।।
एकानंशाशिवा क्षेमा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी । ईश्वरी सर्ववन्द्या च गोपनीया शुभंकरी ।।
पालिनी सर्वभूतानां तथा कामांगहारिणी । सद्योमुक्तिप्रदा देवी वेदसारा परात्परा ।।
हिमालयसुता सर्वा पार्वती गिरिजा सती । दक्षकन्या देवमातामन्दलज्जा हरेस्तनूः ।।

वृन्दारण्यप्रिया वृन्दा वृन्दावनविलासिनी । विलासिनी वैष्णवी च ब्रह्मलोकप्रतिष्ठिता ।।
रूक्मिणी रेवती सत्यभामा जाम्बवती तथा । सुलक्ष्मणामित्रविन्दा कालिन्दीजह्नुकन्यका ।।
परिपूर्णा पूर्णतया तथा हैमवती गतिः । अपूर्वा ब्रह्मरूपा च ब्रह्माण्डपरिपालिनी ।।
ब्रह्माण्डभाण्डमध्यस्थाब्रह्माण्डभाण्डरूपिणी । अण्डरूपाण्डमध्यस्था तथाण्डपरिपालिनी ।।
अण्डबाह्याण्डसंहर्त्री शिवब्रह्महरिप्रिया । महाविष्णुप्रिया कल्पबृक्षरूपा निरन्तरा ।।
सारभूता स्थिरा गौरी गौरांगी शशिशेखरा । श्वेतचम्पकवर्णाभा शशिकोटिसमप्रभा ।।
मालतीराल्यभूषाढ्या मालतीमाल्यधारिणी । कृष्णस्तुता कृष्णकान्ता वृन्दावनविलासिनी ।।
तुलस्यधिष्ठातृदेवी संसारार्णवपारदा । सारदाहारदाम्भोदा यशोदा गोपनन्दिनी ।।
अतीतगमना गौरी परानुग्रहकारिणी । करूणार्णवसम्पूर्णा करूणार्णवाधारिणी ।।
माधवी माधवमनोहारिणी श्यामवल्लभा । अन्धकारभयध्वस्ता मंगल्या मंगलप्रदा ।।
श्रीगर्भा श्रीपदा श्रीशा श्रीनिवासाच्युतप्रिया । श्रीरूपा श्रीहरा श्रीदा श्रीकामा श्रीस्वरूपिणी ।।
श्रीदामानन्ददात्री च श्रीदामेश्वरवल्लभा । श्रीनितम्बाश्रीगणेशाश्रीस्वरूपाश्रिता श्रुतिः ।।
श्रीक्रियारूपिणीश्रीला श्रीकृष्णभजनान्विता । श्रीराधा श्रीमती श्रेष्ठा श्रेष्ठरूपा श्रुतिप्रिया ।।
योगेशी योगमाता च योगातीता युगप्रिया । योगप्रिया योगगम्या योगिनीगणवन्दिता ।।
जबा कुसुमसंकाशा दाडिमीकुसुमोपमा । नीलाम्बरधरा धीरा धैर्यरूपधराधृतिः ।।
रत्नसिंहासनस्था च रत्नकुण्डलभूषिता । रत्नालंकारसंयुक्ता रत्नमालाधरा परा ।।
रत्नेद्रसारहाराढया रत्नमालाबिभूषिता । इन्द्रनीलमणिन्यस्तपादपद्मशुभा शुचिः ।।
कार्तिकी पौर्णमासी च अमावस्या भयापहा । गोविन्दराजगृहिणी गोविन्दगणपूजिता ।।
वैकुण्ठनाथगृहिणी वैकुण्ठपरमालया । वैकुण्ठदेवदेवाढया तथा वैकुण्ठसुन्दरी ।।
मदालसा वेदवती सीता साध्वी पतिव्रता । अन्नपूर्णा सदानन्दरुपा कैवल्यसुन्दरी ।।
कैवल्यदायिनी श्रेष्ठा गोपीनाथमनोहरा । गोपीनाथेश्वरी चण्डी नायिकानयनान्विता ।।
नायिका नायकप्रीता नायकानन्दरूपिणी । शेषा शेषवती शेषरूपिणी जगदम्बिका ।।
गोपालपालिकामायाजायानन्दप्रदातथा । कुमारी यौवनानन्दा युवती गोपसुन्दरी ।।
गोपमाता जानकी च जनकानन्दकारिणी । कैलासवासिनी रम्भा वैराग्यकुलदीपिका ।।
कमलाकान्तगृहिणी कमला कमलालया । त्रैलोक्यमाता जगतामधिष्ठात्रीप्रियाम्बिका ।।
हरकान्ता हररता हरानन्दप्रदायिनी । हरपत्नी हरप्रीता हरतोषणतत्परा ।।
हरेश्वरी रामरता रामा रामेश्वरी रमा । श्यामला चित्रलेखा च तथा भुवनमोहिनी ।।

सुगोपी गोपवनिता गोपराज्यप्रदा शुभा । अंगारपूर्णा माहेयी मत्स्यराजसुतासती ।।
कौमारी नारसिंही च बाराही नवदुर्गिका । चञ्चलाचञ्चलामोदा नारी भुवनसुन्दरी ।।
दक्षयज्ञहरा दाक्षी दक्षकन्या सुलोचना । रतिरूपा रतिप्रीया रतिश्रेष्ठा रतिप्रदा ।।
रतिलक्षणगेहस्था विरजा भुवनेश्वरी । शंकास्पदा हरेर्जाया जामातृकुलवन्दिता ।।
वकुला वकुलामोदधारिणी यमुनाजया । विजया जयपत्नी च यमलार्जुनभञ्जिनी ।।
वक्रेश्वरी वक्ररुपा वक्रवीक्षणवीक्षिता । अपराजिता जगन्नाथा जगन्नाथेश्वरी यतिः ।।
खेचरी खेचरसुता खेचरत्वप्रदायिनी । विष्णुवक्षःस्थलस्था च विष्णुभावनतत्परा ।।
चन्द्रकोटिसुगात्री च चन्द्राननमनोहरा । सेवा सेव्या शिवा क्षेमा तथा क्षेमंकरी वधुः ।।
यादवेन्द्रवधुः शैब्या शिवभक्ता शिवान्विता । केवला निष्कला सूक्ष्मा महाभीमाभयप्रदा ।।
जीमूतरूपा जैमूती जितामित्रप्रमोदिनी । गोपालवनिता नन्दा कुलजेन्द्रनिवासिनी ।।
जयन्ती यमुनांगी च यमुनातोषकारिणी । कलिकल्मषभंगा च कलिकल्मषनाशिनी ।।
कलिकल्मषरूपा च नित्यानन्दकरी कृपा । कृपावती कुलवती कैलासाचलवासिनी ।।
वामदेवी वामभागा गोविन्दप्रियकारिणी । नरेन्द्रकन्या योगेशी योगिनी योगरूपिणी ।।
योगसिद्धा सिद्धरूपा सिद्धक्षेत्रनिवासिनी । क्षेत्राधिष्ठातृरूपा च क्षेत्रातीता कुलप्रदा ।।
केशवानन्ददात्री च केशवानन्ददायिनी । केशवा केशवप्रीता केशवी केशवप्रिया ।।
रासक्रीडाकरी रासवासिनी राससुन्दरी । गोकुलान्वितदेहा च गोकुलत्वप्रदायिनी ।।
लवंगनाम्नी नारंगी नारंगकुलमण्डना । एलालवंगकर्पूरमुखवासमुखान्विता ।।
मुख्या मुख्यप्रदामुख्यरूपामुख्यनिवासिनी । नारायणी कृपातीता करूणामयकारिणी ।।
कारूण्या करूणा कर्णा गोकर्णा नागकर्णिका । सर्पिणी कौलिनी क्षैत्रवासिनी जगदन्वया ।।
जटिला कुटिला नीला नीलाम्बराधरा शुभा । नीलाम्बराविधात्री च नीलकण्ठप्रिया तथा ।।
भगिनी भागिनीभोग्या कृष्णभोग्याभगेश्वरी । बलेश्वरी बलाराध्या कान्ता कान्तनितम्बिनी ।।
निम्बिनी रूपवती युवती कृष्णपीवरी । विभावरी वेत्रवती संकटा कुटिलालका ।।
नारायणप्रिया शैला सृक्कणीपरिमोहिता । दृक्पातमोहिता प्रातराशिनी नवनीतिका ।।
नवीना नवनारी च नारंगफलशोभिता । हैमी हेममुखी चन्द्रमुखी शशिसुशोभना ।।
अर्द्धचन्द्रधरा चन्द्रवल्लभा रोहिणी तमिः । तिमिंगिलकुलामोदमत्स्यरूपांगहारिणी ।।
कारिणी सर्वभूतानां कार्यातीता किशोरिणी । किशोरवल्लभा केशकारिका कामकारिका ।।
कामेश्वरी कामकला कालिन्दीकूलदीपिका । कलिन्दतनयातीरवासिनी तीरगेहिनी ।।

कादम्बरीपानपरा कुसुमामोदधारिणी । कुमुदा कुमुदानन्दा कृष्णेशी कामवल्लभा ।।
तर्काली वैजयन्ती च निम्बदाडिम्बरूपिणी । बिल्ववृक्षप्रिया कृष्णाम्बरा बिल्वोपमस्तनी ।।
बिल्वात्मिका बिल्वबसुर्बिल्ववृक्षनिवासिनी । तुलसीतोषिका तैतिलानन्दपरितोषिका ।।
गजमुक्ता महामुक्ता महामुक्तिफलप्रदा । अनंगमोहिनी शक्तिरूपा शक्तिसवरूपिणी ।।
पञ्चशक्तिस्वरूपा च शैशवानन्दकारिणी । गजेन्द्रगामिनी श्यामलतानंगलता तथा ।।
योषिच्छक्तिस्वरूपा च योषिदानन्दकारिणी । प्रेमप्रिया प्रेमरूपा प्रेमानन्दतरंगिणी ।।
प्रेमहारा प्रेमदात्री प्रेमशक्तिमयी तथा । कृष्णप्रेमवती धन्या कृष्णप्रेमतरंगिणी ।।
प्रेमभक्तिप्रदा प्रेमा प्रेमानन्दतरंगिणी । प्रेमक्रीडापरीतांगी प्रेमभक्तितरंगिणी ।।
प्रेमार्थदायिनी सर्वश्वेता नित्यतरंगिणी । हावभावान्विता रौद्रा रूद्रानन्दप्रकाशिनी ।।
कपिला श्रृंखला केशपाशसम्बन्धिनी घटी । कुटीरवासिनी धूम्रा धूम्रकेशा जलोदरी ।।
ब्रह्माण्डगोचरा ब्रह्मस्वरूपिणी भवभाविनी । संसारनाशिनी शैवा शैवलानन्ददायिनी ।।
शिशिरा हेमरागाढया मेघरूपातिसुन्दरी । मनोरमा वेगवती वेगाढया वेदवादिनी ।।
दयान्विता दयाधरा दयारूपा सुसेविना । किशोरसंगसंसर्गा गौरचन्द्रानना कला ।।
कलाधिनाथवदना कलानाथाधिरोहिणी । विरागकुशला हेमपिंगला हेममण्डना ।।
भाण्डीरतालवनगा कैवर्ती पीवरी शुकी । शुकदेवगुणातीता शुकदेवप्रिया सखी ।।
विकलोत्कर्षिणी कोषा कौशेयाम्बरधारिणी । कौषावरी कोषरूपा जगदुत्पत्तिकारिका ।।
सृष्टिस्थितिकरी संहारिणी संहारकारिणी । केशशैवलधात्री च चन्द्रगात्रा सुकोमला ।।
पद्मांगरागसंरागा विन्ध्याद्रिपरिवासिनी । विन्ध्यालया श्यामसखी सखीसंसाररागिणी ।।
भूता भविष्या भव्या च भव्यगात्रा भवातिगा । भवनाशान्तकारिण्याकाशरूपा सुवेशिनी ।।
रतिरंगपरित्यागा रतिवेगा रतिप्रदा । तेजस्विनी तेजोरूपा कैवल्यपथदा शुभा ।।
भक्तिहेतुर्मुक्तिहेतुर्लंघिनी लंघनक्षमा । विशालनेत्रा वैशाली विशालकुलसम्भवा ।।
विशालगृहवासा च विशालबदरीरतिः । भक्त्यतीता भक्तिगतिर्भक्तिका शिवभक्तिदा ।।
शिवभक्तिस्वरूपा च शिवार्द्धांगविहारिणी । शिरीषकुसुमामोदा शिरीषकुसुमोज्ज्वला ।।
शिरीषमृद्वी शैरीषी शिरीषकुसुमाकृतिः । बामांगहारिणी विष्णोः शिवभक्तिसुखान्विता ।।
विजिता विजितामोदा गणगा गणतोषिता । हयास्या हेरम्बसुता गणमाता सुखेश्वरी ।।
दुःखहन्त्री दुःखहरा सेवितोप्सितसर्वदा । सर्वज्ञत्वविधात्री च कुलक्षेत्रनिवासिनी ।।
लवंगा पाण्डवसखी सखीमध्यनिवासिनी । ग्राम्यगीता गया गम्या गमनातीतानिर्भरा ।।

सर्वांगसुन्दरी गंगा गंगाजलमयी तथा । गंगेरिता पूतगात्रा पवित्राकुलदीपिका ।।
पवित्रगुणशीलाढया पवित्रानन्ददायिनी । पवित्रगुणसीलाढया पवित्रकुलदीपनी ।।
कल्पमाना कंसहरा विन्ध्याचलनिवासिनी । गोवर्द्धनेश्वरी गोवर्द्धनहास्या हयाकृतिः ।।
मीनावतारा मीनेशी गगनेशी हया गजी । हरिणी हारिणी हारधारिणी कनकाकृतिः ।।
विद्युत्प्रभा विप्रमाता गोपमाता गयेश्वरी । गवेश्वरी गवेशी च गवीशी गतिवासिनी ।।
गतिज्ञा गीतकुशला दनुजेन्द्रनिवारिणी । निर्वाणधात्री नैर्वाणी हेतुयुक्ता गयोत्तरा ।।
पर्वताधिनिवासा च निवासकुशला तथा । संन्यासधर्मकुशला संन्यासेशी शरन्मुखी ।।
शरच्चन्द्रमुखी श्यामहारा क्षेत्रानिवासिनी । वसन्तरागसंरागा वसन्तवसनाकृतिः ।।
चतुर्भुजा षड्भुजा च द्विभुजा गौरविग्रहा । सहस्रास्या विहास्या च मुद्रास्या मुददायिनी ।।
प्राणप्रिया प्राणरूपा प्राणरूपिण्यपावृता । कृष्णप्रीता कृष्णरता कृष्णतोषणतत्परा ।।
कृष्णप्रेमरता कृष्णभक्ता भक्तफलप्रदा । कृष्णप्रेमा प्रेमभक्ता हरिभक्तिप्रदायिनी ।।
चैतन्यरूपा चैतन्यप्रिया चैतन्यरूपिणी । उग्ररूपा शिवक्रोडा कृष्णक्रोडा जलोदरी ।।
महोदरी महादुर्गकान्तारसुस्थवासिनी । चन्द्रावली चन्द्रकेशी चन्द्रप्रेमतरंगिणी ।।
समुद्रमथनोभ्दूता समुद्रजलवासिनी । समुद्रामृतरूपा च समुद्रजलवासिका ।।
केशपाशरता निद्रा क्षुधा प्रेमतरंगिका । दूर्वादलश्यामतनुर्दूर्वादलतनुच्छविः ।।
नागरी नागरीरागा नागरानन्दकारिणी । नागरालिंगनपरा नागरांगणमंगला ।।
उच्चनीचा हैमवतीप्रिया कृष्णतरंगदा । प्रेमालिंगनसिद्धांगी सिद्धसाध्यविलासिका ।।
मंगलामोदजननी मेखलामोदधारिणी । रत्नमञ्जीरभूषांगी रत्नभूषणभूषणा ।।
जम्बालमालिका कृष्णप्राणा प्राणविमोचना । सत्यप्रदा सत्यवती सेवकानन्ददायिका ।।
जगद्योनिर्जगद्बीजा विचित्रमणिभूषणा । राधारमणकान्ता च राध्या राधनरूपिणी ।।
कैलासवासिनी कृष्णप्राणसर्वस्वदायिनी । कृष्णावतारनिरता कृष्णभक्तफलार्थिनी ।।
याचकायाचकानन्दकारिणी याचकोज्ज्वला । हरिभूषणभूषाढयानन्दयुक्तार्द्रपादगा ।।
है-है-तालधरा थै-थै-शब्दशक्तिप्रकाशिनी । हे-हे-शब्दस्वरूपा च ही-ही वाक्यविशारदा ।।
जगदानन्दकर्त्री च सान्द्रानन्दविशारदा । पण्डिता पण्डितगुणा पण्डितानन्दकारिणी ।।
परिपालनकर्त्री च तथा स्थितिविनोदिनी । तथा संहारशब्दाढया विद्वज्जनमनोहरा ।।
विदुषां प्रीतिजननी विद्वत्प्रेमविवर्द्धिनी । नादेशी नादरूपा च नादबिन्दुविधारिणी ।।
शून्यस्थानस्थिता शून्यरूपपादपवासिनी । कार्तिकव्रतकर्त्री च वासनाहारिणी तथा ।।

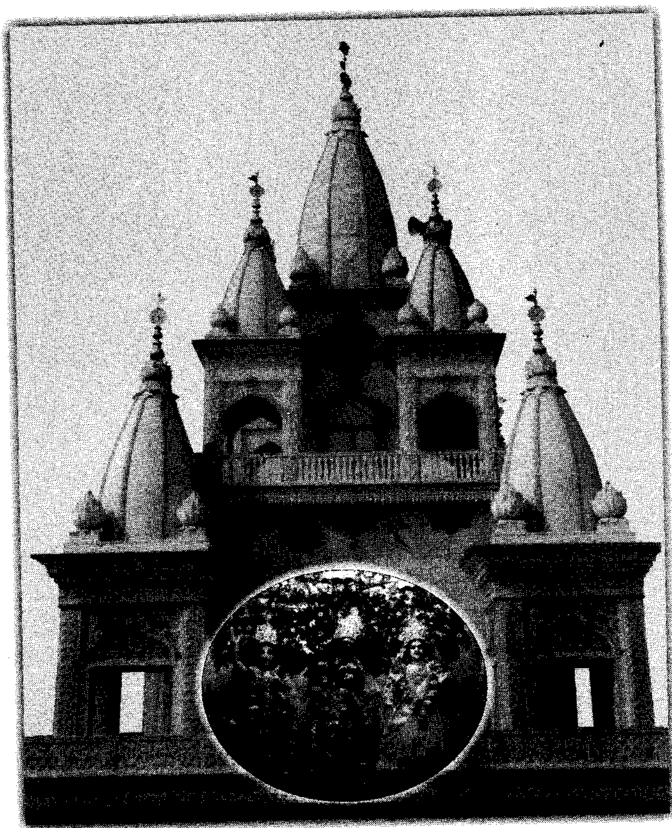
जलाशया जलतला शिलातलनिवासिनी । क्षुद्रकीटांगसंसर्गा संगदोषविनाशिनी ।।
कोटिकंदर्पलावण्या कोटिकंदर्पसुन्दरी । कंदर्पकोटिजननी कामबीजप्रदायिनी ।।
कामशास्त्रविनोदा च कामशास्त्रप्रकाशिनी । कामप्रकाशिका कामिन्यणिमाद्यष्टसिद्धिदा ।।
यामिनी यामिनीनाथवदना यामिनीश्वरी । यागयोगहरा भुक्तिमुक्तिदात्री हिरण्यदा ।।
कपालमालिनी देवी धामरूपिण्यपूर्वदा । कृपान्विता गुणागौण्या गुणातीतफलप्रदा ।।
कूष्माण्डभूतवेतालनाशिनी शरदान्विता । शीतला शबला हेला लीला लावण्यमंगला ।।
विद्यार्थिनी विद्यमाना विद्या विद्यास्वरूपिणी । आन्वीक्षिकीशास्त्ररूपाशास्त्रसिद्धान्तकारिणी ।।
नागेन्द्रा नागमाता च क्रीडाकौतुकरूपिणी । हरिभावनशीला च हरितोषणतत्परा ।।
हरिप्राणा हरप्राणा शिवप्राणा शिवान्विता । नरकार्णवसंहर्त्री नरकार्णवनाशिनी ।।
नरेश्वरी नरातीता नरसेव्या नरांगना । यशोदानन्दनप्राणवल्लभा हरिवल्लभा ।।
यशोदानन्दनारम्या यशोदानन्दनेश्वरी । यशोदानन्दनाक्रीडा यशोदाक्रोडवासिनी ।।
यशोदानन्दनप्राणा यशोदानन्दानर्थदा । वत्सला कोशला काला करूणार्णवरूपिणी ।।
स्वर्गलक्ष्मीर्भूमिलक्ष्मीर्द्रौपदी पाण्डवप्रिया । तथार्जुनसखी भौमी भैमी भीमकुलोभ्दवा ।।
भुवनामोहना क्षीणा पानासक्ततरा तथा । पानार्थिनी पानपात्रा पानपानन्ददायिनी ।।
दुग्धमन्थनकर्माढया दधिमन्थनतत्परा । दधिभाण्डार्थिनी कृष्णाक्रोधिनी नन्दनांगना ।।
घृतलिप्ता तक्रयुक्ता यमुनापारकौतुका । विचित्रकथका कृष्णाहास्यभाषणतत्परा ।।
गोपांगनावेष्टिता च कृष्णसंगार्थिनी तथा । रासासक्ता रासरतिरासवासक्तवासना ।।
हरिद्रा हारिता हारिण्यानन्दार्पितचेतना । निश्चैतन्या च निश्चेता तथा दारूहरिद्रिका ।।
सुबलस्य सखी कृष्णभार्या भाषातिवेगिनी । श्रीदामस्य स्वसा दामदामिनी दामधारिणी ।।
कैलासिनी केशिनी च हरिदम्बरधारिणी । हरिसांनिध्यदात्री च हरिकौतुकमंगला ।।
हरिप्रदा हरिद्वारा यमुनाजलवासिनी । जैत्रप्रदा जितार्थी च चतुरा चातुरी तमी ।।
तमिस्रातपरूपा च रौद्ररूपा यशोऽर्थिनी । कृष्णार्थिनी कृष्णकला कृष्णानन्दविधायिनी ।।
कृष्णार्थवासना कृष्णरागिणी भवभाविनी । कृष्णार्थरहिता भक्ता भक्तभक्तिशुभप्रदा ।।
श्रीकृष्णरहिता दीना तथा विरहिणी हरेः । मथुरा मथुराराजगेहभावनभावना ।।
श्रीकृष्णभावना मोदा तथोन्मादविधायिनी । कृष्णार्थव्याकुला कृष्णसारचर्मधरा शुभा ।।
अलकेश्वरपूज्या च कुबेरेश्वरवल्लभा । धनधान्यविधात्री च जाया काया हया हयी ।।
प्रणवा प्रणवेशी च प्रणवार्थस्वरूपिणी । ब्रह्मविष्णुशिवार्द्धांगहारिणी शैवशिंसपा ।।
राक्षसीनाशिनी भूतप्रेतप्राणविनाशिनी । सकलेप्सितदात्री च शची साध्वी अरून्धती ।।
पतिव्रता पतिप्राणा पतिवाक्यविनोदिनी । अशेषसाधिनी कल्पवासिनी कल्परूपिणी ।।

अथ फलश्रुतिः

श्रीमहादेव उवाच

इत्येतत् कथितं देवि राधानामसहस्रकम् । यः पठेत् पाठयेद्वापि तस्य तुष्यति माधवः ।।
किं तस्य यमुनाभिर्वा नदीभिःसर्वतः प्रिये । कुरूक्षेत्रादितीर्थैश्च यस्य तुष्टो जनार्दनः ।।
स्तोत्रस्यास्य प्रसादेन किं न सिध्यति भूतले । ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चाः स्यात् क्षत्रियो जगतीपतिः ।।
वैश्यो निधिपतिर्भूयात शूद्रो मुच्येत जन्मतः । ब्रह्महत्यासुरापानस्तेयादेरतिपातकात् ।।
सद्यो मुच्येत देवेशि सत्यं सत्यं न संशयः । राधानामसहस्रस्य समानं नास्ति भूतले ।।
स्वर्गे वाप्यथ पाताले गिरौ वा जलतोऽपि वा । नातः परं शुभं स्तोत्रं तीर्थं नातः परं परम् ।।
एकादश्यां शुचिर्भूत्वा यः पठेत् सुसमाहितः । तस्यसर्वार्थसिद्धिःस्यात्श्रृणुयाद् वा सुशोभने ।।
द्वादश्यां पौर्णमास्यां वा तुलसीसंनिधौ शिवे । यः पठेच्छृणुयाद्वापि तस्य तत्तत् फलं श्रृणु ।।
अश्वमेधं राजसूयं बार्हस्पयं तथात्रिकम् । अतिरात्रं वाजपेयमग्निष्टोमं तथा शुभम् ।।
कृत्वायत्फलमाप्नोति श्रुत्वा तत्फलमाप्नुयात् । कार्तिके चाष्टमीं प्राप्य पठेद्वा श्रृणुयादपि ।।
सहस्रयुगकल्पान्तं वैकुण्ठवसतिं लभेत् । ततश्च ब्रह्मभवने शिवस्य भवने पुनः ।।
सुराधिनाथभवने पुनर्याति सलोकताम् । गंगातीरं समासाद्य यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विष्णोः सारूप्यमायाति सत्यं सत्यं सुरेश्वरि । मम वक्त्रक्रगिरेर्जाता पार्वतीवदनाश्रिता ।।
राधानामसहस्राख्या नदी त्रैलोक्यपावनी । पठयतेहि मयानित्यं भक्त्याशक्त्या यथोचितम् ।।
मम प्राणसमं ह्येतं तव प्रीत्या प्रकाशितम् । नाभक्ताय प्रदातव्यं पाषण्डाय कदाचन ।।
नास्तिकाय विरागाय रागयुक्ताय सुन्दरी । तथा देयं महास्तोत्रां हरिभक्ताय शंकरि ।।
वैष्णवेषु यथाशक्तिदात्रो पुण्यार्थशालिने । राधानामसुधावारि मम वक्त्रासुधाम्बुधेः ।।
उद्धतासौ त्वया यत्नाद् यत्नस्तं वैष्णवाग्रणीः ।
विशद्धसत्त्वाय यथार्थवादिने द्विजस्य सेवानिरताय मन्त्रिणे ।
दात्रे यथाशक्ति सुभक्तिमानसे राधापदध्यानापराय शोभने ।।
हरिपादांकमधुपमनोभूताय मानसे । राधापादसुधास्वादशालिने वैष्णवाय च ।।
दद्यात् स्तोत्रं महापुण्यं हरिभक्तिप्रसाधनम् । जन्मान्तरं न पश्यन्ति राधाकृष्णपदार्थिनः ।।
मम प्राणा वैष्णवा हि तेषां रक्षार्थमेव हि । शूलं मया धार्यते हि नान्यथा मेऽत्र कारणम् ।।
हरिभक्तिद्विषामर्थे शूलं संधार्यते मया । श्रृणु देवि यथार्थं मे गदितं मयि सुव्रते ।।
भक्तासि मे प्रियासि त्वमतः स्नेहात् प्रकाशितम् । कदापि नोच्यते देवि मया नामसहस्रकम् ।।

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे श्रीश्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम् समाप्तम् ।।



श्रीगौड़ीय मठ, मोतीनगर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)



श्रीमती कमलादेवी रस्तोगी (शिष्या), मोतीनगर, लखनऊ की समृति में

मुद्रक: कुशकुमार शर्मा, मालाड (प.), मुंबई-४०० ०६४.